आत्मवीर सुक़रात

Onkar Press Allahabad.

॥ ओ३म् ॥

ओंकार आदर्श-चरितमाला की छठी पुस्तक

आत्मवीर सुकरात

राजनैतिक और सामाजिक सुधारक

'Self-reverence, self knowledge, self control,
These three alone lead life to sovereign power,
Yet not for power (power for herself
Would come uncalled for) but to live by law,
Acting the law we live by without fear ;
And because right is right, to follow right,
Were wisdom in the scorn of Consequence.
—Tennyson

लेखक

पं० बृजमोहन शर्म्मा खहरा निवासी

प्रकाशक

पं० ओंकारनाथ वाजपेयी

प्रथमवार १०००] [मूल्य ।)

भूमिका

प्रिय पाठक वृन्द

इस पुस्तक की कोई विस्तृत भूमिका लिखने की आवश्यकता नहीं है। जो कुछ इस पुस्तक में लिखा गया है वह Trial and Death of Socrates by F. J. Church M.A, के आधार पर है। सुकरात यूनान देश का बड़ा भारी राजनैतिक व सामाजिक सुधारक हो गया है अतः उसके जीवन चरित को पढ़कर यदि एक भी सज्जन लाभ प्राप्त कर सकें तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूंगा। यदि आपने इस पुस्तक को अपने एक बन्धु के उत्साह का फल समझ कर, अपनाया तो मैं पुनः आपकी सेवा करने का उद्योग करूंगा।

अन्त में मैं पं० ज्योती प्रसाद शर्म्मा दभा निवासी व म० विजयसिंह जी तथा म० रामकिशोर जी गुप्त को हार्दिक धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने मुझे इस काम में अच्छी सम्मति प्रदान की। पं० ज्योती प्रसाद शर्म्मा ने तो इस पुस्तक को मेरे साथ दुहराया भी था अतः मैं उनका विशेषकर कृतज्ञ हूं।

ता० १ अक्तूबर १९१५
आश्विन कृष्ण अष्टमी
संवत् १९७२

विनीत
बृजमोहन शर्म्मा
लहरा निवासी।

॥ ओ३म् ॥

आत्मवीर सुकरात

की

जीवनी पर एक दृष्टि

[१]

पूर्व निवेदन

आहार निद्रा भय मैथुनञ्च सामान्यमेतत् पशुभिर्नराणाम् ।
धर्मो हि तेषामधिको विशेषो धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः ॥

इस छोटीसी पुस्तक में सुकरात की जीवनी, विचार, उस पर लगाये अभियोग, कारागार समय और मृत्यु का वृत्तांत है। इसमें उसकी प्रबल सत्य की खोज का भी वर्णन किया गया है जिस खोज को कोई बाह्य शक्ति उसके जीवन से जुदा नहीं कर सकी थी किन्तु उसका अन्त सुकरात के जीवनान्त के ही साथ हुआ था। इसमें यह भी दिखाया गया है कि यह उन लोगों के साथ जो कि मूर्ख होते हुए भी अपने को बुद्धिमान समझते थे, कैसी विलक्षण तर्क करता था। इन बातों को

सामने रखकर देखें तो ज्ञात होता है कि उसने इतिहास के पृष्ठों में कितना उच्च पद प्राप्त करलिया था। जब उसके जीवन पर दृष्टि डालते हैं तो उसकी समानता करनेवाले कठिनता से बहुत कम दिखाई देते हैं। सुकरात की जीवनी के आरम्भिक समय का एक बड़ा भाग अज्ञात् है। जो कुछ भी उसके विषय में मालूम हुआ है वह केवल तितर बितर पड़े हुए लेखों द्वारा ही जाना गया है। उसके विषय में बहुत से लेखकों के लेख मिलते हैं किन्तु उनमें से विश्वसनीय कोई नहीं है। अफ़लातू (Plato) और ज़ेनोफ़न (Zenophon) ही की सम्मति उसके सम्बन्ध में सत्य कही जा सकती है। परन्तु इन दोनों ने भी उसकी वृद्धावस्था का ही वृत्तान्त लिखा है, इस प्रकार उसके जीवन का प्रथमभाग अन्धकारमय है। अतः जो कुछ भी उसका हाल मिला है वह पाठकों के सन्मुख टूटे फूटे शब्दों में रखा जाता है। परन्तु उसकी जीवन चर्चा लिखने से पहिले एथेन्स नगर की सुकरात के समय की दशा का जान लेना आवश्यक है।

---

[२]

एथेन्स नगर की दशा व राज्यप्रणाली

यूरुप महाद्वीप के दक्षिणी भाग में एक यूनान देश है जिसे ग्रीस (Greece) भी कहते हैं। यह देश प्राचीनकाल में सभ्यता के शिखर पर पहुंचगया था। यहां की राजधानी उसी समय से एथेन्स (Athens) नगर में रहती आई है। सुकरात के समय में एथेन्स बड़ा नगर नहीं था और वहां के

निवासी अपना अधिक समय सर्वसाधारण के साथ व्यतीत करते थे। उस समय वहां पर प्रत्येक विद्या सम्बन्धी पंडित वास करते थे अतः वहां का रहना ही मनुष्य के लिये बड़ी भारी शिक्षा देनेवाला होगया! राजनेता पेरीक्लिस (Pericles) का विचार था कि एथेन्स वास्तविक में शिक्षा का केन्द्र हो जावे। सुकरात ने भी एक स्थान पर यूनान देश की आत्मिक व मानसिक उन्नति के विषय में बड़े गौरव के साथ लिखा है। "एथेन्स के निवासी वहां की राज्य सम्बन्धी संस्थाओं द्वारा भी एक प्रकार की शिक्षा पाते थे। डेलस द्वीप (Delos island) की सन्धि (डेलस और अन्य कई द्वीपों ने मिलकर ईरान के बादशाह के विपरीत एक षड्यन्त्र रचा था उसी के सम्बन्ध में यह सन्धि हुई थी) का केन्द्र होने के कारण एथेन्स ने इतना उच्च नाम प्राप्त करलिया था कि इसके शत्रु अति द्वेष करने लगे थे। एथेन्स एक ऐसे राज्य का केन्द्र था जिसमें सदैव न्यायानुसार कार्य होते थे। उस राज्य की प्रधान संस्था में प्रत्येक एथेन्स निवासी को (यदि वह किसी प्रकार अयोग्य न था) भाग लेना पड़ता था। इस संस्था के अधिवेशन के समय प्रत्येक सभासद् की उपस्थिति अनिवार्य (Compulsory) थी। वहां पर कोई पंचायती संस्था या ऐसी संस्थाएं जैसी कि आज कल इङ्गलिस्तान जापान, जरमनी, अमरीका इत्यादि सभ्य देशों में है नहीं थीं। एथेन्स की इस संस्था के प्रधान ही सब कार्य करते थे। जब यह सारी बातें उपस्थित थीं तो अवश्य ही प्रत्येक निवासी प्रतिदिन राजकीय झगड़ों को सुनने और उनके विषय में अपनी सम्मति प्रगट करने का अवसर प्राप्त करता था, इस प्रकार उसको राज्यसंबन्धी उच्च श्रेणी की शिक्षा मिलती थी। यह गृहस्थ,

लड़ाई, सन्धि विदेशों तथा स्वदेश सम्बन्धी बातों के विषय में समर्थक व विरोधक के तर्क वितर्क को सुनना था। वह देखता था कि किस प्रकार एक ओर के मनुष्य प्रस्ताव उपस्थित करते और दूसरे उसे दूर प्रदर्शिता के साथ काटते थे, प्रत्येक निवासी को स्वयं भी प्रत्येक बात की परीक्षा करनी पड़ती थी और पश्चात् उस पर अपनी सम्मति प्रगट करनी होती थी। वहां पर बहुत से झगड़े पंचायतों द्वारा भी निपटारे जाते थे और इन सभाओं में सबको बारी २ से भाग लेना पड़ता था। पाठको! क्या इस बात से यह अनुमान नहीं किया जा सकता कि एथेन्स निवासी राज्य संबन्धी शिक्षा सरलता से प्राप्त कर लेते थे। इससे यह भी प्रगट होता है कि सुकरात को लोगों के प्रति तर्क वितर्क करके सत्य बात को जान लेने की कितनी आवश्यकता हुई होगी। एथेन्स की राज्यप्रणाली का विशेषवर्णन आगे भी प्रसङ्गानुसार किया गया है।

[३]

सुकरात का वंश परिचय और बाल्यकाल

सुकरात का जन्म ईसा मसीह से लगभग ४६६ वर्ष पहिले एक शिल्पकार के घर में हुआ। उस दिन किसको ज्ञात था कि यही तुच्छ बालक अपने जीवन में उन्नति करके सर्वश्रेष्ठ तत्ववेत्ता (Philosopher) हो जावेगा। क्योंकि बहुत से बालक उत्पन्न होते, खाते पीते और मरते हैं परन्तु धर्म व

आत्मसुधार की ओर बहुत कम की दृष्टि जाती है। किसी कवि ने सत्य ही कहा है :—

> बरसने को तो बादल रोज़ मौसम में बरसते हैं।
> करें क्या लेकर के लाल क़ीमत में वह सस्ते हैं।
> मगर गरमी की पड़ती हैं मगर काम की एक बूंद होती है।
> बसे कहता पानी कौन वह अनमोल मोती है।

सुकरात का पिता सोफ्रोनिस्कस (Sophroniscus) एक छोटा सा शिल्पकार था और उसकी माता दाई का कार्य करती थी। इस बात का ठीक २ पता नहीं लगता कि सुकरात ने आत्मिक और मानसिक शिक्षा कहां से प्राप्त की थी। इसके विषय में हम जो कुछ कह सकते हैं वह यह है कि उसकी आयु का आरम्भिक भाग ऐसे समय में व्यतीत हुआ था जब कि यूनान देश उन्नति और सभ्यता के शिखर पर विराजमान था। यह समय यूनान की कला कौशल, साहित्य, तर्क, शास्त्र और राजनीति की विलक्षण और शीघ्र होनेवाली उन्नति का था। एथेन्स में उस समय बड़े २ राजनेता और विद्वान देखे जाते थे। यहाँ पर बड़े २ शिल्पकार, कवि, इतिहासवेत्ता जोकि आज दिन तक आदर्श बनाये जाते हैं, निवास करते थे। उनमें से कुछ यह भी थे, एशीलस (कवि) फ्राईडास (शिल्पकार) पेरीक्लिस (राजनेता) थ्यूसी डाइड्स (इतिहासवेत्ता) इक्वीनस इत्यादि। यह ठीक बात है कि सुकरात ने बड़े होने पर इन सब श्रेष्ठ पुरुषों से सम्भाषण किया हो क्योंकि एथेन्स बड़ा नगर नहीं था और इसके अतिरिक्त वहां की राज्यप्रणाली भी बड़ी सहायक थी।

सम्भाषण करते समय यह एक स्थान पर कहता है कि युवावस्था में उसे प्राकृतिक शिक्षा (study of nature) प्राप्त करने की बड़ी उत्कण्ठा थी। उसी स्थान पर यह भी कहा गया है कि उसने प्राकृतिक शिक्षा के पश्चात् (doctrine of ideas) विचार सिद्धान्त (प्लेटो की यह विचार सम्बन्धी कल्पना थी कि यह संसार एक दूसरे संसार का जिसे हम तर्क द्वारा सिद्ध कर सकते हैं अनुकरण है) की ओर अपना ध्यान फेरा था। अरिस्तोफ़ानस अपनी पुस्तक clouds में लिखता है कि सुकरात एक विज्ञानी था जो कि अपने शिष्यों को अन्य बातों के अतिरिक्त गणित और ज्योतिष भी पढ़ाता था, परन्तु इससे कोई बात ठीक २ सिद्ध नहीं होती। उसकी यह बात समूल अयुक्त है क्योंकि यह बात पूर्णतया सत्य ठहराई जा चुकी है कि सुकरात का विज्ञान से कुछ भी सम्बन्ध नहीं था। वह विज्ञान को उसी सीमा तक ठीक कहता था जहां तक वह मनुष्य के लिये लाभकारी होवे जिस प्रकार कि ज्योतिष जहाज के नेता को लाभ देती है। सुकरात कहता था कि विज्ञान से सम्बन्ध करने वाले लोग सूफ़ी लोगों के समान हैं जो कि सर्वदा असम्भव बातों को सम्भव सिद्ध करने की व्यर्थ चेष्टा करते हैं और जो कि देवताओं की इच्छा के प्रतिकूल बहुत सी बातें प्रगट करते हैं। वह यह भी कहा करता था कि जो समय ऐसी बातों में व्यर्थ नष्ट किया जाता है वह कई प्रकार से लाभकारी बातों में लगाया जावे तो अच्छी बात है।

यह ठीक २ नहीं मालूम कि हमारे चरित नायक का ज़ेन्थिपी (Zanthippe) के साथ विवाह सम्बन्ध किस समय हुआ था। ज़ेन्थिपी से सुकरात के तीन पुत्र पैदा हुये

थे। इनके नाम लेम्प्रोकिल्स, सोफ्रोनिस्कस और मैनेज़ीनस थे। आजकल के लेखक कहते हैं कि ज़ेन्थिपी बड़ी लड़ाकू स्त्री थी, वह सर्वदा सुकरात और अपने पुत्रों के साथ रार मचाये रहती थी। लेम्प्रोकिल्स अपनी माता की कटुवानी और स्वभाव को असह्य समझता था। परन्तु सुकरात ने उस को समझा कर उसके हृदय में यह बात भलीभांति बिठादी थी कि माता पिता की टेढ़ी आंखें केवल सन्तान के हित के लिये होतीं हैं। जिस दिन चरित नायक को विष पिलाया गया था उस दिन ज़ेन्थिपी उसके पास उपस्थित न थी, इस से प्रगट होता है कि सुकरात को गृहस्थी का अधिक ध्यान न था। लेखकों की बहुसम्मति से ज्ञात होता है कि सुकरात का गृहस्थ जीवन सुखमय नहीं था।

---

[५]

आत्मिक बल और न्याय प्रियता

सुकरात की जीवनी के प्रथम चालीस वर्ष उपरोक्त बातों से भरे हुए हैं। इन चालीस वर्षों का उसके विषय में अधिक कुछ नहीं मालूम है। ईसा के ४३२ वर्ष पहिले से लेकर ४२६ वर्ष तक वह पोटिडिआ (Potidœa) की लड़ाई में रहा और वहां पर भूक प्यास, सर्दी इत्यादि अनेक कष्टों को सहर्ष सहन करता रहा। इसी लड़ाई में उसने एल्कीबाइड्स (Alcibiades) नामी योद्धा की जान बचाई थी और हर्ष पूर्वक उसको वीरता का पुरस्कार दिलाया था। ४३१ बी० सी में पैलोपोनिशिया की लड़ाई (Peloponnesion war) ठन गई और ४२४

बी० सी० में थीबन्स ने एथेन्स निवासियों को डेलियम (Delium) स्थान पर परास्त कर तितर बितर करदिया तब सुकरात और लेशस (Laches) ही ऐसे वीर थे जो निरुत्साह न हुए। अन्य सब तो भाग गये परन्तु सुकरात अपने स्थान पर डटा रहा और उसने सब को अपनी शूरता से चकित करदिया। यदि एथेन्स के सभी लोग सुकरात का अनुकरण करते तो परास्त होजाना तो दूर रहा रण को अवश्य जीतलेते। फिर सुकरात ने तीसरी बार अपनी वीरता एमफीपोलीज़ (Amphipolis) की लड़ाई में दिखाई परन्तु उसके कार्यों के विषय में अधिक नहीं मालूम है। इस लड़ाई में दोनों ओर के सेनापति मारे गये थे।

इस लड़ाई के १६ वर्ष पश्चात् तक सुकरात के विषय में कुछ नहीं मालूम है। उसके जीवन की विशेष घटनाएं न्यायालय में हुई जो कार्यवाही के बीच दर्शाई गई हैं जो कि हमारे चरित नायक ने स्वयं वर्णन की हैं। उनसे प्रगट होता है कि उसका आत्मिकबल अद्वितीय था और संसार में ऐसी कोई भी क्रोधी अथवा मारडालने वाली शक्ति नहीं थी जो उसे सत्य के मार्ग से हटा दे। महा पुरुषों की वीरता का यही सच्चा नमूना है।

४०६ बी० सी० में लेसी डेमोनियावालों और एथेन्स वालों के बीच अर्गीनुसी स्थान पर युद्ध हुआ जिसका परिणाम एथिन्स निवासियों की अविजय हुई। परन्तु इनका सेनाधिकारी न तो अपने मृत्यु प्राप्त साथियों को गाढ़ सके और जहाज़ों के टूट जाने पर हानि प्राप्त की रक्षा कर सके इस बात को सुन कर एथेन्स में गड़ बड़ी फैलगई और बहुत

से लोग हल्ला मचाने लगे। सेनाधिकारियों के ऊपर यह अभि-
योग चलाया गया परन्तु उन्होंने कहा कि हमने अपने कई सह-
चारियों को यह कार्य करने की आज्ञा दी थी वे बिचारे वेग-
वान वायु के आजाने से कुछ भी न कर सके। इसके पश्चात
वहां की प्रबन्ध कारिणी संस्था ने निश्चय किया कि एथेन्स
निवासी दोनों ओर की बातें सुन कर एक ही साथ आठों
सेनाधिकारियों के विषय में आज्ञा देंगे परन्तु यह निश्चय
करना न्याय विरुद्ध था क्योंकि एथेन्स की राज्य प्रणाली
के अनुसार प्रत्येक दोषी के विषय में पृथक २ न्याय करना
चाहिये था।

सुकरात भी उस समय वहां की प्रबन्ध कारिणी सभा का
सदस्य था। इस सभा के कुल सदस्य पांच सौ थे जो कि
१० जातियों में से प्रत्येक से पचास २ लिये जाते थे। प्रत्येक
जाति के लोग पैंतीस २ दिन तक अपनी बारी से पंच बनते
थे और इनमें से प्रत्येक दश २ एक २ सप्ताह के लिये सरपंच
ठहराये जाते थे। इन दश में से एक व्यक्ति वक्ता बनाया जाता
था अर्थात् उसी को लोगों की सम्मति लेने का अधिकार था
यद्यपि पहिले भी कई वक्ताओं ने उपरोक्त प्रस्ताव का विरोध
किया था परन्तु वह बिचारे मृत्यु और अयश के भय दिखाये
जाने पर चुप रह गये। जिस दिन सुकरात वक्ता बनाया गया
तो उसने उस प्रस्ताव को न्याय प्रतिकूल समझ कर उसके
विषय में लोगों की सम्मति न ली। लोगों ने उसे बहुतेरा धम-
काया परन्तु उसने साहस पूर्वक उत्तर दिया मैंने ठान लिया
है कि चाहे जैसी आपत्ति आवे उसे मैं न्याय के हेतु सहन
करूंगा और तुम्हारे न्याय विरुद्ध प्रस्ताव में भाग न लूंगा
परन्तु सम्मति न लेने का अधिकार उसे एक ही दिन के लिये

प्राप्त था, पीछे विचारे डरपोक पञ्चों ने सम्मति लेना स्वीकार कर लिया और अन्त में सेनाधिकारियों को न्याय विरुद्ध मृत्यु दण्ड मिला।

दो वर्ष पश्चात् चरित नायक ने पुनः अपने कार्य से दर्शा दिया कि वह न्याय के लिये सर्व प्रकार के कष्ट सहने को तयार है। ४०४ बी० सी* में लैसीडोनियां वालों ने एथेन्स पर अधिकार जमा लिया और नगर की रक्षा करनेवाली चारों ओर की दीवारों को भस्म करा दिया। प्रबन्ध कारिणी सभा का पता भी न रहा और क्रिनियास ने लिसिन्डर की सहायता से धनवानों का राज्य स्थापित कर दिया। यह समय बड़ा ही भयानक था क्योंकि राज्य कर्त्ता अपने प्राचीन शत्रुओं को मारने और प्रजा को लूटने पर उतारू थे। यह लोग चाहते थे कि हम अपने कुकर्मों में अधिक से अधिक लोगों को सम्मिलित करलें। इसी विचार से उन्होंने एक दिन सुकरात और चार अन्य पुरुषों को बुलवा भेजा और उनके आजाने पर आज्ञा दी कि सेलेमिस स्थान से लीयन (Leon) नामी पुरुष को पकड़ लाओ यह मारा जावेगा। अन्य चार तो डरके कारण आज्ञा पालन कर मुक्त हुए। परन्तु आत्मवीर सुकरात ने कह दिया कि जिस कार्य को करने में मेरी आत्मा साक्षी नहीं देगी उसे मैं नहीं करूंगा और यह कह कर घर को चला गया। क्यों न कहता, जब दुष्ट लोग नहीं मानते तो वीरों का यही कर्त्तव्य है। पहिले और भी एक समय पर सुकरात ने क्रितियासको चिढ़ा दिया था इसका कारण यह था कि सुकरात क्रितियास के प्रबन्ध के अवगुण नवयुवकों को सुनाया करता

---

* ईसा के सन् से पहिले समय को बी० सी० कहते हैं।

हूं और न उसकी शिक्षा का पालन करने से निषेध करता हूं परन्तु जब मैं बाहर जाता हूं तो चपल लोग मेरी झूठी बड़ाई करके मुझे उसकी सारी शिक्षा भुला देते हैं। अतः जब कभी मैं सुकरात को देख लेता हूं तो लज्जा के कारण आड़ में हो जाता हूं क्योंकि मैंने उसकी आज्ञा का पालन नहीं किया है। इसी से मैं कभी २ यह भी चाहता हूं कि यह मनुष्यों के बीच में से कहीं चला जावे परन्तु ऐसा होजाने पर मुझे और भी अधिक कष्ट मालूम होगा। सो मेरी दशा सांप और छछूंदर की सी होरही है क्योंकि मुझे यह नहीं सूझता कि क्या करूं ?

अब आप देखें कि यह मूर्त्तियों से किस प्रकार मिलता जुलता है और उसमें एक कैसी आश्चर्ययुक्त बात है ? समझ लीजिये कि आप लोगों में से किसी को उसका स्वभाव नहीं मालूम है क्योंकि मैं जानता हूं इस कारण आपको भले प्रकार समझा दूंगा। सुकरात सच्चे हृदय से स्वरूपवानों व ज्ञानवानों के साथ मैत्री स्वीकार करता है परन्तु इसके साथ ही यह भी कहता है कि मैं तो अज्ञानी हूं यह एक हंसा देनेवाली बात है। यही बाहिरी खोल है जिससे सुकरात ने अपने को ढंक लिया है यद्यपि हम सुकरात की खोल को पृथक कर देखें तो भीतर श्रेष्ठ स्वभाव और बुद्धिमानी ही दिखाई देगी। सुकरात धन, बाहिरी स्वरूप और सांसारिक बड़ी २ वस्तुओं की कुछ भी चिन्ता नहीं करता है और इन वस्तुओं की प्रशंसा करनेवाले हम लोगों को भी तुच्छ जीव समझता है। परन्तु उसकी आन्तरिक श्रेष्ठ बातें उसी समय दिखाई देती हैं जब कि वह अपनी वक्तृता सुनाता है, इन वस्तुओं को मैंने देखा है। यह इतनी शोभायमान और

बहुमूल्य हैं कि सुकरात की आज्ञा को ईश्वराज्ञा समझकर पालना उचित है।

एक समय हम सब लोग पोटिडिआ की लड़ाई में थे कि हमारी भोजन सामग्री निपट गई और चारों ओर से आपत्तियों की भरमार होने लगी। परन्तु सुकरात ने इन सब को सहर्ष सहन किया। जब बहुत सा बढ़ा खाद्य पदार्थ हमारे हाथ लगा तो अकेला यही धीर पुरुष उसे प्रसन्नचित्त होकर खाता हुआ दिखाई पड़ा। लोगोंने बहुत कुछ कहा सुनी करके इसको सब से अधिक मदिरा पिलादी परन्तु जिस वस्तु का वह कभी सेवन नहीं करता था उसके पीने से भी उसके मुख पर आलस्य और तन्द्रा नहीं दिखाई दी। एक दिन शीत अधिक खिसल रहा था और बरफ़ पड़ रही थी, लोग बाहिर नहीं निकलते थे और यदि कोई निकलता भी था तो कम्बल और शीत रक्षक पोशाक धारण करके धीरे २ चलता था। परन्तु सुकरात अपने प्रति दिन के अङ्ग रक्षा को धारण कर बड़े वेग से चला तब लोगों ने यह समझकर कि यह हमारी हंसी उड़ाता है उसके ऊपर क्रोध प्रगट किया।

एक दिन सवेरे सुकरात एक वृक्ष के नीचे खड़ा गूढ़ विचार में पड़ा हुआ दिखाई दिया। दोपहर को भी वह उसी दशा में था यहां तक कि लोग खाना खाकर रात को सो रहे परन्तु वह वहीं पर खड़ा रहा। दूसरे दिन सवेरे अपने प्रश्न का उत्तर निश्चय कर सूर्य देव की प्रार्थना सहित प्रणाम करके उस स्थान से हटा। उसकी यह आश्चर्यजनक घटनाएँ स्मरण रखने योग्य हैं।

परन्तु मुझे सुकरात की रण धीरता का भी वर्णन करना

उचित प्रतीत होता है। पोटिडिआ की लड़ाई में मैं ही सेनापति था, जब मैं गिर पड़ा तो अकेला सुकरात ही निकट खड़ा हुआ मेरे शरीर व शस्त्रों की रक्षा करता रहा। विजय के अन्त में जब अन्य सेनाधिकारियों ने मुझको वीरता का पुरस्कार देना निश्चय किया तो मैंने कहा कि विजय के लिये सुकरात को पुरस्कृत करना चाहिये, परन्तु सुकरात! मुझे भलीभांति याद है कि प्रथम तुमने ही कहा कि पुरस्कार तुमको न देकर मुझे ही दिया जावे।

जब डेलियम (Delium) की लड़ाई में हमारी हार हो गई तो पीछे का वृत्तान्त भी सुनने योग्य है। उस लड़ाई में मैं तो अश्वरोही सैनिकोंमें था और सुकरात पैदलोंमें था और इस पर भी उसके ऊपर शास्त्रों का भारी बोझा लदा हुआ था। जब सुकरात और लेशेज़ साथ २ लौट रहे थे तो दैवयोग से मैं आ निकला और मैंने इन दोनों से साहस बांधकर प्रसन्न चित्त रहने की प्रार्थना की। घोड़े पर सवार होने के कारण इस विपत्ति काल में सुकरात के दिखाए हुए अपूर्व दृश्य को मैं ही भले प्रकार देख सकता था उस समय सुकरात शान्ति में सब से अधिक प्रशंसनीय था। वह शान्त चित्त होकर ही शत्रुओं और मित्रों की ओर देखता हुआ वीरता से कार्य करता रहा। शत्रु डर गये कि सुकरात और उसके साथियों पर ऐसी अवस्था में आक्रमण करना सरल नहीं है। इस प्रकार यह सब लोग बेखटके रण से लौटे। तब अरिस्तोफ़ानस की पुस्तक क्लाउड्स को पढ़कर मुझे निश्चय होगया कि यद्यपि उक्त मनुष्य ने तो सुकरात की हंसी की है तद्यपि वह वास्तव में ऐसा ही वीर है जैसा कि पुस्तक से प्रतीत होता है।

अनेक गुण एक २ करके किसी न किसी मनुष्य में मिलते हैं परन्तु यह सब के सब सुकरात में ही एकत्रित दिखाई देते हैं। सुकरात में सर्वोपरि गुण यह है कि इसकी समानता करनेवाला प्राचीन वा वर्त्तमान काल में कोई भी नहीं मिलता। ब्रेसीडाइड्स और अचिलीज़ यह दोनों वीर एक से हैं। नेस्टर और एन्टेनर (राजनेता) यह भी एक दूसरे से मिलते हैं, परन्तु इस अद्भुत वीर की समानता करनेवाला कोई नहीं दिखाई देता केवल उन मूर्त्तियों को छोड़कर जिनसे मैंने उसकी अभी समानता की है। अब तुम सुकरात की वक्तृता सुनोगे तो वह बड़ी भद्दी मालूम होगी क्योंकि वह सदैव अछूत जातियों ही के विषय में वक्ता रहता था और इसके अतिरिक्त उसकी भाषा भी गंवारी और लम्बे चौड़े शब्दों से रहित है। किन्तु यदि आप उसकी वक्तृता के आशय को लेकर ध्यान दें तो यह अति मनोहर और आत्मिकोन्नति व मोक्ष प्राप्ति का मूल साधन प्रतीत होगी। इन्हीं कारणों से मैं सुकरात की प्रशंसा करता हूं।

[८]

सूफ़ी लोग और सुकरात की फ़िलासफ़ी।

सुकरात के पूर्व शास्त्रज्ञों का ध्यान चारों ओर से प्राकृतिक नियमों का अनुसन्धान करने में ही लगा रहा था। उन्होंने अपने ऊपर विश्व को संगठित वस्तु ठहराने का भार ले लिया था। उन्होंने सृष्टि के स्वभाव की भी खोज की थी और अग्नि, जल, वायु आदि तत्वों का भी ज्ञान प्राप्त करना आरम्भ कर दिया था। वे लोग ऐसे प्रश्नों पर कि सर्व वस्तुयें किस प्रकार

बनती बिगड़ती हैं। केवल विचार ही विचार करते रहे थे। परन्तु ४५० बी० सी० के लगभग उनमें से सर्वसाधारण का विश्वास उठ गया क्योंकि उस समय एथेन्स निवासी मानसिक व राजनैतिक प्रश्नों की ओर झुक पड़े थे और उनका असम्भव प्रतीत बातों में से विश्वास जाता रहा था। परन्तु इन शास्त्रों के पास इन प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं था क्योंकि यह लोग इस ओर विचार ही नहीं करते थे।

उस समय सर्व जनता को जो मानसिक व राजनैतिक ज्ञान की आवश्यकता होरही थी वह नये ही उठ खड़े हुए सूफ़ी लोगों ने पूर्ण की, यह लोग द्रव्य लेकर शिक्षा प्रदान करते थे। इन शिक्षकों की शिक्षा व आत्मोन्नति के विषय में विपरीत सम्मतियां हैं जिनका वर्णन करना हमारे प्रसङ्ग के बाहर है। हमको यही कहना है कि सूफ़ी लोग सर्व साधारण को प्राचीन अधूरे विचारों की ही शिक्षा देते थे जिसके प्रति सुकरात सदैव झगड़ा ठानता रहा था क्योंकि उनकी शिक्षा नियमानुकूल नहीं थी। उनको सर्व साधारण के आन्तरिक अवगुणों का कुछ भी ज्ञान नहीं था इसी कारण उन्होंने लोगों का सुधार करने की चेष्टा नहीं की थी। वे अपने शिष्यों को सत्य की शिक्षा ही नहीं देना चाहते थे किन्तु उनकी इच्छा नव युवकों को प्रचलित राजनीतिक व सामाजिक दृष्टि से योग्य बनाने की थी। उन्होंने केवल उस समय की कहावतों को इकट्ठा करके अपनी शिक्षा आरम्भ करदी थी। प्लेटो कहता है कि यह लोग उस मनुष्य के समान थे जिसने किसी जंगली जानवर को वशीभूत करके उसे प्रसन्न करने व उससे बचने की युक्ति का अध्ययन करलिया हो और इसी युक्ति को ज्ञान

समझता हो। यह लोग उसी बात को अच्छा समझते थे जिससे इनके शिष्य प्रसन्न हों अन्यथा और सब को बुरा कहते थे। उनकी सारी फ़िलासफ़ी इन्हीं बातों पर निर्भर थी।

परन्तु सुकरात की फिलासफ़ी ऐसे प्रश्नों का उत्तर जानने पर अवलम्बित थी जैसे पवित्रता क्या है? अपवित्रता क्या है? उच्च क्या है? नीच क्या है? न्याय परायणता क्या है? अन्याय क्या है? बुद्धिमत्ता क्या है? मूर्खता क्या है? साहस क्या है? भय क्या है? राज्य क्या है? राज्यनेता कौन है? राज्य प्रणाली क्या है? राज्य करने की योग्यता किस शिक्षा से प्राप्त हो सकती है?

उसका विचार था कि जो लोग इन प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं वही ज्ञानी हैं शेष अज्ञानी हैं, जो कि, गुलामों से किसी प्रकार अच्छे नहीं हैं। उसके कई प्रश्नों के उत्तर प्लेटो की निम्न लिखित अंग्रेज़ी भाषा की पुस्तकों में प्रगट किये गये हैं:—

प्रश्न	नाम पुस्तक
साहस क्या है?	Laches
सहन शीलता क्या है?	Charmides
पवित्रता और शुद्धता क्या है?	Dialogue of Enthyphron
मित्रता क्या है?	Lysis

सुकरात की फिलासफी मनुष्य सम्बन्धी है परन्तु उसके पूर्व शास्त्रज्ञों की प्रकृति सम्बन्धी, और सूफी लोगों से उसका केवल शास्त्र के दृष्टि बिन्दु में मत भेद है सूफी लोगों का उद्देश्य केवल इधर उधर की बातों को इकट्ठा करना था

परन्तु सुकरात का उद्देश्य मनुष्यों का सुधार करने का था। सूफ़ी लोग मनुष्य के सम्बन्ध में धड़ा धड़ ऐसे शब्दों का प्रयोग करते थे जिनका ठीक २ अर्थ उनको स्वयं ही अज्ञात था। उन्हों ने इन शब्दों का अर्थ जानने के लिये कुछ भी कष्ट नहीं उठाया था वे तो उनके प्रयोग कर लेने ही से संतुष्ट थे चाहे ऐसा करने में वह ठीक हों वा नहीं। संक्षेपतः सुकरात वास्तव में सत्य खोजक था परन्तु सूफ़ी लोग टका कमाने के ही पंडित थे।

---

(६)
लोगों का द्वेष

जिस समय सुकरात कई लड़ाइयों में अपनी वीरता दिखा रहा था साथ ही साथ अरिस्तोफ़ानस [जो कि सदा सुकरात से द्वेष भाव रखता था] ने एक पुस्तक लिखी जिसमें उसने चरित नायक की फ़िलासफ़ी आदि की मनमानी हंसी उड़ाई है। सूफ़ी लोगों की फ़िलासफ़ी को अरिस्तोफ़ानस अत्यन्त घृणा की दृष्टि से देखता था क्योंकि वह इन लोगों को नास्तिक और आत्मबलहीन समझता था। वह स्वयं परम्परा से चली आई बातों में विश्वास करता था और उन लोगोंको जो कि इन सब बातों को विनातर्क उठाये स्वीकार कर लेते थे, अच्छा समझता था। उसने अपनी पुस्तक में सूफ़ी लोगों और स्वतन्त्र विचारवालों पर आक्रमण किया है। उसने इस पुस्तक में सम्पूर्ण हंसी का केन्द्र सुकरात ही को बनाया है जिसका कारण यह प्रतीत होता है कि इस महा-

पुरुष का स्वरूप निराला था जिसे देखकर लोगों को हंसी आती थी आंखें बड़ी २, नासिका चपटी और पोशाक ढीली ढाली थी। प्रत्येक मनुष्य इस महा मूर्ति से जो कि गली गली में दिखाई देती थी भली भांति परिचित था। आरिस्तोफ़ानस को इस बात का ध्यान नहीं था कि सुकरात का मुख्य उद्देश्य सूफ़ी लोगों का विरोध करना है, तभी तो उसने भूठी हंसी उड़ाई है। अरिस्तोफ़ानस के लिये यही बहाना संतोषजनक था कि सुकरात प्राचीन विचारों में बिना उसकी परीक्षा किये विश्वास नहीं करता है अतः हंसी उड़ाये जाने योग्य है। न्यायालय के पाठ में जो आगे चलकर क्लाऊड्स के विषय में कहा गया है वह अक्षरशः ठीक है। अरिस्तोफ़ानस ने उस पुस्तक में शास्त्रों और सूफ़ी लोगों की हंसी उड़ाई है और इन दोनों को ही मिलाकर सुकरात का चरित वर्णन किया है। उसमें दिखाया गया है कि सुकरात हर समय असम्भव बातें किया करता है क्योंकि यूनान के प्राचीन निवासी समझते थे कि पृथ्वी की चाल और प्रबन्ध इत्यादि सब बातें जेअस देवता के आधीन हैं परन्तु सुकरात कहता था कि यह ईश्वरीय नियम बद्ध है और पृथ्वी सूरज के चारों ओर परिक्रमा देती है।

अरिस्तोफ़ानस ने दिखाया है कि सुकरात में असत्य को सत्य सा प्रगट करने की बुरी बान पड़ गई थी। उसने यह भी लिखा है कि सुकरात पुत्रों को शिक्षा देता है कि अपने पिताओं को पीटो क्योंकि यह तो एक भ्रम की बात पहिले से चली आ रही है कि पिता ही पुत्र को पीटे। पिता और पुत्र एक दूसरे पर बराबर २ स्वत्व रखते हैं। आगे चलकर यह कहा है कि

सुकरात ने जान बूझकर देवताओं के प्रति पाप किया है और इसी से नास्तिक बन गया है। यद्यपि एक शास्त्रज्ञ और एक सूफ़ी में बड़ा अन्तर था तथापि अरस्तोफ़ानस ने इन दोनों को मिलाकर सुकरात बना दिया है सुकरात की वास्तविक जीवनी पढ़ने से ज्ञात होता है कि उसके शत्रुओं ने द्वेष ही के कारण यह दोषारोपण किये थे। अतः अब इस बात के कहने की कोई आवश्यकता नहीं है कि क्लाऊड्स एक झूठा, मन गढ़न्त उपन्यास है। इन सब बातों से यही सिद्ध होता है कि इस पुस्तक के लिखे जाने के पूर्व ही सुकरात ने तर्क द्वारा यूनान देश में यश प्राप्त कर लिया था।

[१०]

अन्तिम जीवन

अब हम उन बातों पर पहुंच गये हैं जो आगे लिखे सम्भाषणों में वर्णित हैं। इसमें सन्देह नहीं कि सुकरात अपने समय का यूनान देश में सर्वोत्तम पुरुष था उसके इसी उच्च पद प्राप्त करने पर अधिकाँश लोगों को द्वेष होगया था और इसी द्वेष का फल यह हुआ कि ३९९ बी० सी० अर्थात् ३९९ वर्ष ईसाके पूर्व में मेलीतस आदि कई बड़े २ राज नेताओं ने उसके ऊपर नवयुवकों का चाल चलन बिगाड़ने का अभियोग चलाया जिसके के कारण अन्त में सुकरात को मृत्यु दण्ड दिया गया। उस समय एथेन्स का प्रधान पुजारी किसी धार्मिक कार्य के लिये एक द्वीपमें गया हुआथा इस कारण मृत्यु के पहिले चरित नायक को एक मास तक कारागार में बन्द रहना पड़ा। मृत्यु के लिये नियत तिथि से एक रात्रि पहिले क्रितोंने जो कि सुक-

रात का परम मित्र था वहां से भाग जाने की सम्मति दी परन्तु सुकरात ने इस काम को न्याय और आत्म विरुद्ध समझ कर नहीं किया । तत्पश्चात् उसने प्रसन्नता पूर्वक विष का प्याला पिया और मृत्यु शय्या पर टांग पसार कर सोगया। उसने यदि अपना वाद विवाद करना छोड़ दिया होता तो अवश्य ही वह मृत्यु दण्ड से बच जाता किन्तु उसने न्यायाधीशों से स्पष्टतया कह दिया कि I can not hold my peace for that would be to disobey God मैं चुप नहीं रह सकता क्योंकि ऐसा करने से मैं ईश्वर की आज्ञा का उलंघन करूंगा।

उसने देशवासियों के सुधार के सामने मृत्यु की कुछ भी चिन्ता नहीं की। उसका तो सिद्धान्त था कि "मरना भला है उसका जो अपने लिये जिये, जीता है वह जो मर चुका स्वदेश के लिये"।

उसकी जीवनी से हमें आत्मबल की बड़ी भारी शिक्षा प्राप्त होती है। वह भलाई के सामने सब वस्तुओं को तुच्छ समझता था जैसा कि उसने अपना मुक़द्दमा होते समय न्यायालय में कहा था,

"I spend my whole life in going about and persuading you all to give your first and cheapest care to the perfection of your souls, and not till you have done that to think of your bodies or your wealth ; and telling you that virtue does not come from wealth, but that wealth and every thing which men have, comes from virtue."

अर्थात् मैं अपना सारा जीवन तुम लोगों के पास जाने और तुमको सबसे पहले अपने आत्म सुधार की ओर ध्यान

देने के लिये वाध्य करने में लगाता रहा कि जब तक तुम आत्म सुधार न करलो तब तक अपने शरीर और धन की ओर विल्कुल ध्यान मत दो। और सर्वदा कहता रहा कि धन के द्वारा गुण नहीं प्राप्त होते परन्तु धन और जो कुछ मनुष्य प्राप्त कर सकता है वह सब गुण के द्वारा ही प्राप्त करता है।

---

(११)

न्यायालय और दण्डआज्ञा

विरोधियों के अभियोग चलाने पर सुकरात को राज की आज्ञानुसार न्यायालय में उपस्थित होना पड़ा, उसकी ७० वर्ष की आयु में ऐसा समय उसे केवल एक ही वार देखना पड़ा था। वहां पर नियत समय तीन बराबर भागों में बांटा गया, पहिले भाग में सुकरात ने अपनी निरपराधता सिद्ध करने के हेतु वक्तृता दी, दूसरे में न्यायाधीशों ने सम्मति लेकर दण्ड नियत किया और तीसरे में फिर सुकरात ने दूसरा दण्ड अपने ही लिय नियमानुकूल चुना अब हम पहिले भाग में हुई बात लिखते हैं:—

सुकरात की वक्तृता—"एथेन्स निवासियो! मैं नहीं कह सकता कि मेरे विरोधियों ने आपके हृदय पर कैसा प्रभाव डाला है किन्तु उनकी बातें वाहिरी रूप से इतनी सत्य सी मालूम होती हैं कि मैं अपना आपा भूल गया परन्तु फिर भी वास्तव में उनका एक भी शब्द सत्य नहीं है। उनकी सारी असत्य बातों में से अत्यन्त आश्चर्य जनक यह है कि मैं सूफ़ी लोगों की भांति चालाकीसे वाद करता हूं और तुमको मेरी बातें सुनते समय

सावधान रहना चाहिये कि कहीं मैं तुमको पट्टीन देदूं। ऐसा कहते समय उनको लज्जा भी तो नहीं आई क्योंकि मेरेबोलते ही आप लोगों पर सत्य विदित होजायगा और मैं इस बात को सिद्ध करदूंगा कि मैं किसी प्रकार चालाक नहीं हूं; यदि वह चालाक मनुष्य कहने से उस मनुष्य की ओर संकेत करे जो सत्यवादी हो तब तो मैं अवश्यही उनके कहने से भी अधिक चालाक हूं। मेरे विरोधियों ने एक भी शब्द यथार्थ नहीं कहा है परन्तु आप सारा सत्य मुझ से सुनेंगे। आप लोगों को मुझ से कोई शब्दों से अलंकृत और मनमोहनी वक्तृता की आशा नहीं करनी चाहिये जैसी कि उन्होंने आपके सन्मुख दी है। विना पहिले से तयारी किये ही मैं आपको सब बातों का यथार्थ बोध कराद्ंगा क्योंकि मुझे अपने निरपराधी होने का पूर्ण विश्वास है। अतएव आपको अन्यथा विचार करलेना अनुचित होगा क्योंकि वास्तव में आपके सन्मुख मुझे बुढ़ापे में झूठबोलना कठिन और लज्जास्पद मालूम होता है। परन्तु एथेन्स निवासियो! मैं आप से एक प्रार्थना स्वीकृत कराना चाहता हूं, वह यह है कि यदि मैं आप लोगों के सन्मुख वैसी ही बोलचाल का प्रयोग करूं जैसा करते हुए कि आप लोगों ने मुझे सार्वजनिक स्थानों में देखा है तो आप लोग आश्चर्य न करें। अब आप ध्यान पूर्वक सत्य को सुनिये। मेरी अवस्था सत्तर वर्ष से अधिक है और मेरे लिये यह पहिला ही समय है कि मैं यहां न्यायालय में आया हूं अतएव यहां की बोलचालसे सर्वथा अनभिज्ञहूं। यदि मैं विदेशी होता तो आप लोग मुझे अपनी मातृभूमि की बोलचाल का प्रयोग करते देख अवश्य क्षमा प्रदान करते किन्तु यह बात तो है

नहीं। इस कारण आप किसी प्रकार मेरी बोलचाल के ढङ्ग पर अधिक ध्यान न दीजिये, किन्तु सत्य बातों को ही ध्यान पूर्वक सुनते चलिये, यही सच्चे न्यायाधीशों का कर्त्तव्य है।

एथेन्स निवासियो! मुझे प्रथम तो अपने को प्राचीन विरोधियों के लगाये अभियोग के निरपराधी ठहराना है और पीछे से वर्त्तमान विरोधियों केप्रति, विषय में कुछ कहना है क्योंकि बहुत से लोग कई वर्ष से मेरे विरुद्ध आपके कानों में मंत्र फूंकते रहे हैं और ऐसा करते हुए उन्होंने एक भी शब्द यथार्थ नहीं कहा है, इसी कारण मैं उसे अनायतस (वर्तमान विरोधी) के सामने भी अधिक डरता हूं। किन्तु मित्रो! दूसरे इनसे भी विकट हैं क्योंकि वे लोग ऐसी बातें कह कर कि 'यहां पर एक सुकरात नामी बड़ा चालाक मनुष्य है वह सदा पृथ्वी व आकाश की बातों की परीक्षा करता रहता है और असत्य को बनावटी बातों से सत्य सिद्ध कर देता है' आपको बचपन से मेरा विरोधी बनाते रहे हैं और इसके अतिरिक्त आप उस अवस्था में प्रत्येक बात का सुगमता से विश्वास कर लेते थे। ऐसी गप्पें उड़ानेवालों का मुझे बड़ा भय है क्योंकि प्राकृतिक घटनाओं के जिज्ञासु को यहां के निवासी नास्तिक समझते हैं। सब से अधिक अन्याय की बात तो यह है कि मैं उनके नाम भी नहीं जानता इस कारण अरस्ताफ़ानस को छोड़कर औरों में से एक को भी आपके सन्मुख बुलाकर तर्क नहीं कर सकता। इस प्रकार मुझे परछाइयों का ही सामना करना है जिनसे प्रश्न करने पर उत्तर दाता कोई नहीं है। इस प्रकार मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि मेरे विरोधी दो प्रकार के हैं एक तो मेलीतस और उसके साथी दूसरे प्राचीन जिनका

कि मैं आपको अभी परिचय दे चुका हूं। आपकी आज्ञा से मैं अपने को प्रथम तो प्राचीन विरोधियों के प्रति निरापराधी सिद्ध करूंगा क्योंकि उनके ही लाये हुए अभियोग आप लोगों ने पहिले सुने हैं।

अब मैं थोड़े से प्राप्त समय में ही अपना पक्ष आरम्भ करता हूं जिसमें मैं इस बात का उद्योग करूंगा कि आपके हृदय से चिरस्थायी झूंठे प्रभाव को दूर करूं। यदि ऐसा करने से आपका हित हुआ तो मैं आरम्भ करता हूं, परिणाम तो परम पिता के ही आधीन है। थोड़े से समय में इतना कठिन कार्य करना असम्भव सा प्रतीत होता है किन्तु मुझे तो राजनीति का पालन करना ही उचित है।

मैलीतस ने आपके सन्मुख जो अभियोग लिखकर उपस्थित किया है जिसके कारण यह भारा प्रभाव पड़ा है उसको देखना हमारा प्रथम कार्य होगा। यह कौनसी गप्पें हैं जिनको मेरे शत्रु चारों ओर फैला रहे हैं ? मैं यह कल्पना किये लेता हूं कि यह लोग नियमानुसार मेरे प्रति अभियोग चला रहे हैं और उनके लाए हुये हस्त लिखित दोष को पढ़ता हूं जो कि निम्न प्रकार हैं। "सुकरात एक दुष्ट मनुष्य है जो सदैव पृथ्वी व आकाश की बातों का अनुसन्धान करता रहता है जो असत्य बातों को झूठे तर्क से सत्य सिद्ध कर देता है और जो औरों को भी यही कहने की शिक्षा देता है"। यह लोग यही कहते हैं और अरस्तोफानस के उपन्यास में भी आपने एक सुकरात नामी मनुष्य को टोकरी में झूलते हुये और यह कहते हुए कि मैं वायु को हिला रहा हूं तथा अन्य प्रकार की व्यर्थ बातें बकते हुये जिनका मुझे कुछ भी

ज्ञान नहीं है देखा होगा। यदि कोई मनुष्य इस प्राकृतिक विद्या को जानता है तो मैं उसका विरोध नहीं करता हूं परंतु मुझे विश्वास है कि मेलीतस मेरे ऊपर यह दोषारोपण नहीं कर सकता। सच मुच मुझे इन बातों से कोई सम्बन्ध नहीं है और इसके लिये आप सबही मेरे साक्षी हैं। आप में से बहुतेरों ने मुझे बात चीत करते हुये सुना होगा अब मेरी उन से यह प्रार्थना है कि यदि उन्हों ने यह बातें कहते हुये मुझे सुना है तो अपने २ पड़ोसी को सूचना दे दें इस से आपको यह भी सिद्ध हो जावेगा कि मेरे विषय की उड़ाई हुई अन्य बातें भी असत्य हैं।

मैं स्वयं लोगों को शिक्षा देकर द्रव्य प्राप्त करना जैस कि जार्जियास तथा हिपियास करते हैं अच्छा समझता हूं किन्तु यदि आपने मेरे विषय में यह बात सुनी है तो वह निर्मूल है क्यों कि यह लोग चाहे जिस नगर में जाकर नवयुवकों को उनकी समाज से फुसला कर अपनी ओर आकर्षित करलेते हैं और युवक भी इनसे मिलकर इनके ऊपर व्यर्थ द्रव्य लुटाना अपना अहोभाग्य समझते हैं। पेरस स्थान से एक और भी चालाक मनुष्य इस समय एथेन्स में आया हुआ है। संयोग से मैं एक दिन हिपियास के पुत्र केलियास के पास गया इसने अपने पुत्र को सूफियों के हाथ शिक्षा दिलाने में आप सब लोगों से भी अधिक धन व्यय किया है वहां जाकर मैंने उस से कहा। "केलियास! यदि तुम्हारे दोनों पुत्र बछड़े वा बछेड़े होते तो हम लोग उनको स्वाभाविक शिक्षा दिलाने के लिये सरलता से किसी गड़रिये वा अश्वरक्षक को ढूंढ़ लेते परन्तु यह तो मनुष्य है तुमने उनकी शिक्षा के लिये किसे योग्य

समझा है ? मनुष्य जाति की शिक्षा में कौन निपुण है ? संभव है कि आपने अपने पुत्रों की शिक्षा के हेतु इन बातों पर विचार किया हो। अतएव बताओ कि ऐसा कोई मनुष्य है या नहीं ?" जब उसने हां है कह कर उत्तर दिया तो मैंने पूछा "वह कौन है कहां से आया है और उसका वेतन क्या है ?" उसने उत्तर दिया उसका नाम ईविनस है वह पेरस से आया है। और उसका वेतन ३०० रुपया है। तब मैंने विचार किया कि ईविनस बड़ा भाग्यशाली है जो मनुष्यों को शिक्षा देने में प्रवीण है। यदि मैं इस विद्या को जानता होता तो पृथ्वी पर पैर न रखता किन्तु वास्तिव में एथेन्स निवासियों ! मैं इस विद्या को नहीं जानता हूं।

स्यात् आप में से कोई महाशय पूछेंगे 'सुकरात तुम अवश्य ही कुछ न कुछ विलक्षण कार्य करते होगे जिसके कारण यह बातें तुम्हारे विषय में फैलाई गई हैं यदि तुम कोई असाधारण कार्य न करते होते तो यह विपरीत बातें न फैलाई जातीं। अतएव हमें बताओ। वह कौन सा कार्य है। क्यों कि हम सच्चा हाल जाने बिना न्याय नहीं कर सकते ?' इस प्रश्न को मैं उचित समझता हूं। और आपके सम्मुख इन झूठी बातों के फैलाने का मैं कारण प्रगट करने का उद्योग करूंगा। अब आप हंसी त्याग कर सुनिये कि मैंने यह बुरा नाम अपनी बुद्धिमत्ता के कारण पाया है, और इस बुद्धिमत्ता का होना मैं मानव जाति के लिये परमावश्यक समझता हूं। इस बुद्धिमत्ता में मैं अवश्य ही बुद्धिमान् हूं किन्तु प्राकृतिक बुद्धिमत्ता जिसके विषय में मैं आप से पूर्व कह चुका इस बुद्धिमत्ता से अधिक श्रेष्ठ है। पहिली का मुझे कुछ ज्ञान नहीं है और यदि

कि मुझे सर्व साधारण के व निजी कार्यों में ध्यान देने का अवसर ही नहीं प्राप्त होता है। ईश्वर में इतनी भक्ति होने के कारण ही मैं निर्धन रहता हूं।

इसके अतिरिक्त धनवान् लोगों के लड़कों के पास बहुत सा व्यर्थ समय होता है, इसलिये वह भी मेरे साथ फिरते हैं क्योंकि जब मैं लोगों की परीक्षा करता हूं तो उन्हें आनन्द प्राप्त होता है. कभी कभी यह लड़के भी मेरी तरह अन्य लोगों की परीक्षा करते हैं और इसी प्रकार उन्हें भी ऐसे बहुत लोग मिलते हैं जो अज्ञानी होते हुये भी अपने को ज्ञानी कहते हैं। जब यह लड़के उन लोगों का अज्ञान प्रगट करते हैं तो वह स्वयं उनसे अप्रसन्न न होकर मेरे ऊपर कोप करते हैं कि 'सुकरात बड़ा ही नीच है, वह नवयुवकों को बिगाड़ता है। परन्तु जब उन से प्रश्न किया जाता है कि वह क्या करता है ? नवयुवकों को क्या शिक्षा देता है ! तब तो वह सुन्न पड़ जाते हैं और अपना दोष छिपाने की इच्छा से वही सुनी हुई झूठी गप्पें बखानने लगते हैं कि वह नास्तिक है और असत्य बात को उलट फेर कर बनावटी बातों से सत्य सी सिद्ध कर देता है। वह लोग वास्तविक सत्य को अर्थात अपनी अज्ञानता को प्रगट नहीं करते हैं 'वह लोग मेरे विरोधी बनकर अपनी वाक् पटुता से आप लोगों के कानों में झूठी बातें भर देते हैं ! यही कारण है जिससे मैलीतस, अनायतस व लायकन मेरे प्रति अभियोग चला रहे हैं जिनमें मैलीतस कवियों की ओर से अनायतस राजनीतिज्ञों व शिल्पकारों की ओर से और लायकन वक्ताओं की ओर से हैं और जैसा कि मैं पहिले भी कह चुका हूं कि मुझे बड़ा आश्चर्य होगा यदि

मैं इस थोड़े से प्राप्त समय में आप लोगों के हृदयों से इतने दिन के जमे हुये पक्षपात की जड़ उखाड़ने में सफल होगया। एथेन्स निवासियो! जो कुछ मैंने कहा है यही सत्य वृतान्त है इसमें से न तो कुछ छिपाया है और न अपनी ओर से कुछ नमक मिर्च ही मिलाया है। मुझे अब भी विश्वास है कि मेरी स्पष्ट कह देने की प्रकृति ही शत्रु खड़े कर रही है चाहे आप इस पर अब विचार करें चाहे पीछे किन्तु सत्य यही है।

जो कुछ मैंने अब तक कहा वह तो अपने प्राचीन विरोधियों के लाये अभियोगों से मुक्त होने के लिये कहा था परंतु अब मैं 'देश भक्त' (जैसा वह स्वयं बनता है) मैलतिस के लाये अभियोग से मुक्त होने के लिये बोलता हूं। पहिले की तरह मैं उनके भी लाये हुये अभियोग को पढ़ता हूं 'जो कि स्यात यह है 'सुकरात एक नीच मनुष्य है, वह नव युवकोंको बिगाड़ता है, नगर के देवों में विश्वास नहीं रखता और नवीन देवताओं की उपासना करता है, अब मैं एक बात को काटने का उद्योग करूंगा। मैलीतस कहता है कि मैं नवयुवकों को बिगाड़ता हूं परन्तु मैं कहता हूं कि वह लोगों के ऊपर अन्धाधुन्ध दोषारोपण करके आप लोगों से बड़ी भारी हंसी करता है और उसे आपकी प्रतिष्ठा का कुछ भी विचार नहीं है यद्यपि उसने देश सम्बन्धी बातों पर कुछ भी विचार नहीं किया है तदपि वह अपने को देश हितैषी कहता है। अब मैं आपके सन्मुख इस बात को भी सिद्ध करता हूं।

इधर पधारिये, मैलीतस महाशय! क्या यह बात सच नहीं कि आप नवयुवकों का चतुर होना देश के लिये अत्यावश्यक समझते हो?

मैलीतस—मैं समझता तो हूं।

सोकरात—आइये और न्यायाधीशोंको बतलाइये कि उन्हें कौन सुधारता है? तुम इन बातों में अधिक भाग लेते हो इसलिये इस बात को भी जानते होगे। तुमने मेरे प्रति अभियोग चलाया है क्योंकि तुम कहते हो कि मैं नवयुवकों को बिगाड़ता हूं, अतएव अब न्यायाधीशों को यह भी प्रगट करदो कि उन्हें सुधारता कौन है? मैलीतस! तुम मौन धारण किये हो और उत्तर नहीं देते क्या इस बात से तुम्हें लाज नहीं आती? क्या तुम्हारा मौन ही इस बात को सिद्ध नहीं करता है कि तुमने देश की बातों पर बहुत कम विचार किया है? महाशय कृपया बतलाइये कि नवयुवकों का सुधारक कौन है?

मैलीतस—देश के नियम।

सुकरात—महाशय मेरा यह प्रश्न नहीं है यह बताओ कि कौन पुरुष इन नियमों का पालन करता हुआ उन्हें सुधारता है?

मैलीतस—उपस्थित न्यायाधीश उन्हें सुधारते हैं।

सुकरात—तुम्हारा क्या अभिप्राय है क्या यह न्यायाधीश उन्हें शिक्षा दे सकते और सुधार सकते हैं?

मैलीतस—वास्तव में।

सुकरात—यह अच्छी सुनाई, तब तो हित चिन्तक बहुत हैं। और क्या यहां के उपस्थित दर्शक भी उन्हें सुधारते हैं।

मैली०—जीहां, वह भी सुधारते हैं।

सुक०—मैलीतस! क्या महासभा के सदस्य भी उन्हें

बिगाड़ते हैं या यह भी सुधारते हैं।

मैली०—यह भी उन्हें सुधारते हैं।

सुक०—तो मुझे छोड़कर प्रायः सब ही एथेन्स निवासी उन्हें सुधारते हैं। मैं अकेला ही उन्हें बिगाड़ता हूं, क्या तुम्हारा यही अभिप्राय है?

मैली०—सचमुच मेरा यही आशय है।

सुक०—तब तो तुमने मुझे बहुत नीच माना है। अब यह कि क्या यही बात घोड़ों के विषय में भी यथार्थ है? क्या एक ही मनुष्य उन्हें बिगाड़ता है और अन्य सब सुधारते हैं? इसके विपरीत क्या एक ही मनुष्य जो अश्व रक्षक व शिक्षक है, उन्हें नहीं सुधारता और अन्य सब नहीं बिगाड़ते! मैलीतस क्या यह बात घोड़ों व अन्य जीवों के विषय में युक्त नहीं है। यह बात तो सच है चाहे तुम और अनायतस उत्तर दो या न दो। नवयुवक बड़े ही भाग्यशाली हैं यदि एक यही मनुष्य उनके साथ बुराई तथा अन्य सब भलाई करते हैं। सचमुच मैलीतस! तुम अपने शब्दों से यह प्रगट कर रहे हो कि तुमने इन बातों पर कभी विचार तक नहीं किया है। जिन बातों के लिये तुम मुझे दोषी ठहराते हो उनका तुम्हें कुछ भी ज्ञान नहीं है, कृपया मुझे यह बताओ कि भले मनुष्यों में रहना अच्छा है। या बुरों में। उत्तर दीजिये यह कोई कठिन प्रश्न नहीं है। क्या बुरे मनुष्य अपने पार्श्ववर्त्तियों को हानि और भले मनुष्य लाभ नहीं पहुंचाते हैं!

मैली०—है तो यही बात।

सुक०—तो क्या कोई ऐसा भी मनुष्य है जो नगरवालों से लाभ छोड़कर अपनी हानि कराना चाहे कृपया उत्तर दीजिये

क्योंकि उत्तर देने के लिये आप नियम बद्ध हैं क्या कोई अपनी हानि भी कराना चाहता है।

मैली०—कोई नहीं चाहता।

सुक०—तो क्या मैं नवयुवकों को जान बूझकर बिगाड़ता हूं या बिना जाने, जिसके लिये तुम मुझे दोषी बताते हो।

मैली०— तुम जान बूझ कर ऐसा करते हो ?

सुक०—मैलीतस ! तुम आयु में मुझसे बहुत छोटे हो। क्या तुम समझते हो कि तुम तो इतने बुद्धिमान हो सो यह जानते हो कि भले लोग भलाई और बुरे लोग बुराई करते हैं किन्तु मैं इतना मूर्ख हूं सो यह भी नहीं जानता कि यदि मैं नवयुवकों को बिगाड़ूंगा तो वह मेरे साथ बुराई करेंगे तुम इस बात का विश्वास न तो मुझे दिला सकते हो और न किसी अन्य व्यक्तिको कि मैं यह नहीं जानता हूं। अतएव या तो मैं नवयुवकों को किसी प्रकार नहीं बिगाड़ता और यदि बिगाड़ता हूं भी तो अपने अज्ञानवश, इस कारण तुम सब प्रकार से झूठे हो। और जो मैं अज्ञानवश उन्हें बिगाड़ता हूं तो नियम तुम्हें आज्ञा नहीं देते ऐसे कार्य के लिये दोषी बताओ जिसे मैं जान बूझकर नहीं करता हूं क्योंकि ज्योंही मैं अपनी भूल देखूंगा त्योंही ऐसा करने से रुक-जाऊंगा, किन्तु तुमने मुझे न तो शिक्षा दी और न मेरी भूल बताई, यह सब छोड़कर भी तुम मुझे न्यायालयके बीच दोषी बता रहे हो जहां से नियम किसी अभियुक्त को शिक्षा प्राप्ति के लिये न भेज कर दण्ड पाने की आज्ञा देते हैं।

एथेन्स निवासियो ! सच पूछो तो मैलीतस ने इन बातों पर लेश मात्र भी ध्यान नहीं दिया है। तब भी, मैलीतस !

वताओ में किस प्रकार नवयुवकों को विगाड़ता हूं। तुम्हारे लाये हुए अभियोग से तो यह प्रगट होता है कि मैं नवयुवकों को आदेश करता हूं कि नगर के देवों में से विश्वास हटाकर नवीन देवों की उपासना करो। क्या तुम्हारी समझ में मैं इसी प्रकार की शिक्षा से उन्हें विगाड़ता हूं?

मैली०—वास्तव में तुम इसी शिक्षा से उन्हें विगाड़ते हो।

सुक०—तोनही, इदेवों के नाम पर कृपया मुझे व न्यायाधीशों को अपना आशय समझा दो क्योंकि मैं अभी तक तुम्हारा अभिप्राय नहीं समझ सका। क्या तुम यह कहते हो कि मैं नवयुवकों से कहता हूं कि नगर के देवताओं को छोड़ कर अन्य देवों की उपासना करो? क्या तुम मेरे प्रति इस कारण अभियोग चला रहे हो कि मैं नवीन देवों में विश्वास करता हूं? तुम मुझे पक्का नास्तिक समझते हो या कुछ देवों का उपासक?

मैली०—मेरा आशय यह है कि तुम किसी को नहीं मानते।

सुक०—मैलीतस! यह तो और भी आश्चर्य की बात है। तुम यह बात क्यों कहते हो? क्या तुम यह जानते हो कि मैं अन्य लोगों की तरह सूर्यचन्द्र को देव नहीं समझता हूं?

मैली०-न्यायाधीशो! मैं शपथ द्वारा कहता हूं कि यह सूर्य को पत्थर और चन्द्र को दूसरी पृथ्वी समझता है।

सुक०—प्रिय मैलीतस! क्या तुम अनक्सागोरस के प्रति अभियोग चला रहे हो? मालूम होता है कि तुम न्यायाधीशों को तुच्छ व अशिक्षित समझते हो क्या उन्होंने नहीं देखा कि अनक्सागोरस ने ही यह अपने निजी विचार अपने

ग्रन्थों द्वारा प्रगट किये हैं। नवयुवक तो इन बातों को केवल चार २ पैसे की टिकट मोल लेकर उक्त लेखक के नाटकों में देखते हैं और यदि मैं भी उनको यही बातें अपनी निजी बताकर सिखाऊं तो वह शीघ्र ही मुझे झूठा समझकर मेरे में से विश्वास हटा लेंगे। कृपया सचमुच बतलाइये कि क्या सचमुच आप मुझे नास्तिक समझते हैं?

मेली०–जी हाँ, मैं आपको पक्का नास्तिक समझता हूं।

सुक०—मैलीतस! मुझे अन्य कोई भी नास्तिक नहीं समझता और मेरी समझ में तो स्यात् तुम भी जान बूझकर झूठ बोल रहे हो। एथेन्स नियासियो! मुझे मालूम होता है कि मैलीतस बड़ा आलसी और असभ्य है, वह अपने मन में सोचरहा है, "क्या यह बुद्धिमान सुकरात समझ सकता है कि मैं उससे हंसी कर रहा हूं क्योंकि मैं एक स्थान पर कही हुई बात को दूसरे स्थान पर काटता हूं, अथवा क्या मैं सुकरात को चक्कर में डाल सकता हूं"?"। मेरी समझ में मैलीतस अपनी ही कही हुई बात को काटता है वह ऐसा कहता हुआ मालूम होता कि सुकरात एक दुर्जन है जो कि देवों में विश्वास नहीं रखता किन्तु जो कि देवों में विश्वास रखता है। यह मूर्खता की बात है।

मित्रो! अब देखिये कि मैं उसका यह आशयकिस प्रकार निकाल रहा हूं। एथेन्स नियासियो! मुझे बीच में मत टोको क्योंकि मैं आप से आरम्भ में ही प्रार्थना कर चुका हूं कि यदि मैं अपनी स्वाभाविक बोलचाल का भी प्रयोग करूं तो आप लोग मुझे बोलने से न रोकें।

मैलीतस! तो क्या कोई ऐसा भी पुरुष है जो मनुष्य

सम्बन्धी वस्तुओं की उपस्थिति को तो मानता हो किन्तु मनुष्य जाति की उपस्थिति को न मानता हो ! मित्रों ! सुकरात यदि टोक टाक न करके मैलीतस से मेरी बात का उत्तर दिलवा। क्या कोई ऐसा भी मनुष्य है जो यह कहता हो कि घुड़सवारी तो होती है किन्तु घोड़ा कोई वस्तु नहीं होती या वह कहता हो कि बांसुरी बजाई तो जाती है परन्तु बजानेवाला कोई नहीं होता है? महाशय ऐसा कोई भी मनुष्य नहीं है, मैं इस बात से न्यायाधीशों व मैलीतस सबको ही संतुष्ट कर दूंगा परन्तु आप मेरे एक और प्रश्न का भी उत्तर दीजिये। क्या कोई ऐसा भी मनुष्य है जो यह कहता हो कि दैवी वस्तुयें तो होती हैं परन्तु देव नहीं होते हैं?

मैली०—ऐसा कोई मनुष्य नहीं है।

सुक०—मैलीतस ! मुझे इस बात से बड़ी प्रसन्नता हुई कि खट्टम पट्टम करके न्यायाधीशों ने तुमसे उत्तर तो निकलवालिया। तो तुम यह कहते हो कि मैं दैवी वस्तुओं में तो विश्वास रखता हूं (चाहे यह नवीन हों या प्राचीन) और अन्य पुरुषों को भी ऐसा ही करने की सम्मति देता हूं। तो तुम्हारे राये अभियोगानुसार मैं दैवी वस्तुओं में किसी न किसी रूप में विश्वास करता हूं। इस बात को तो तुमने अपने हस्त लिखित उपस्थित किये अभियोग में स्वीकार किया है परन्तु यदि मैं देव सम्बन्धी वस्तुओं ही में विश्वास करता हूं तो यह स्वयं सिद्ध है कि देवों में भी करता हूं। क्या यह बात ठीक नहीं है? मैलीतस ! तुम उत्तर नहीं देते और मौन धारण किये हो इससे यह बात सिद्ध होती है कि तुम मेरी बात को स्वीकार करते हो। क्या हम लोग यह नहीं मानते कि देव सम्बन्धी

तुएं अथवा लघुदेव या तो स्वयं देव ही हैं वा देवों के पुत्र ? क्या तुम्हें यह स्वीकार है ?

मैली०—मुझे यह बात स्वीकार है।

सुक०—तो तुम इस बात को स्वीकार करते हो कि मैं [देवों में विश्वास करता हूं, यदि यह लघु देव स्वयं देवता तब तो तुम मुझ से हंसी करते हो क्योंकि तुमने अभी कहा है कि मैं देवों की उपासना नहीं करता हूं और फिर यह कहते हो कि करता भी हूं। क्योंकि मैं लघु देवोंमें विश्वास रखता हूं। और यदि यह लघुदेव महादेवों के परी वा अन्य माताओं से उत्पन्न बालक हैं तो मैं यह पूछता हूं कि ऐसा कौन मनुष्य है जो कहता हो कि संसार में पुत्र तो होता है किन्तु पिता नहीं होता ? यह वही बात है जैसे कोई आदमी कहे कि गधे व घोड़े के बच्चे तो हैं किन्तु गधे व घोड़े नहीं है। स्यात्, मेरे ऊपर नास्तिकता का दोष इस लिये लगाया है कि या तो तुम मेरी चतुराई की परीक्षा करना चाहते हो वा तुम्हे मेरे में कोई दोष ही नहीं दिखाई दिया है किन्तु तुम किसी को यह विश्वास नहीं दे सकते कि पुत्र तो होते हैं परन्तु पिता नहीं होते।

एथेन्स निवासियो ! मै समझता हूं कि अब मुझे मैलीतस के लाये अभियोग के प्रति अपनी निर्दोषता सिद्ध करने के लिये अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है। परन्तु मैं इतना अवश्य कहूंगा कि मैंने अपने वाद विवाद के कारण ही अनेक शत्रु खड़े कर लिये हैं और यदि मुझे मृत्यु दण्ड मिला तो वह मैलीतस वा अनायतस के लाये अभियोग के कारण नहीं किन्तु उस द्वेष और भ्रम के ही कारण मिलेगा। इन दोनों

(इन व म्रम) ने पूर्व समय में भी अनेक देश हितैषियों के प्राण लिये हैं और आगे भी लेंगे मुझे कुछ भी पछतावा नहीं होगा यदि ये इस समय मेरे जीवन ग्राहक बनें।

स्यात् मुझ से कोई प्रश्न करेगा सुकरात क्या तुम्हें ऐसे कार्य करने में जिससे तुम्हारी मृत्यु होने की सम्भावना हो लाज नहीं आती? तो मैं शीघ्र ही सच्चे हृदय से उत्तर दूंगा, मित्र! यदि तुम्हारा यह विचार है कि किसी कार्य के करते समय मनुष्य के बुराई भलाई तथा अच्छे बुरे के अतिरिक्त अपने जीवन मृत्यु का भी ध्यान रखना चाहिये तो तुम्हारा विचार सदा निन्दनीय है और तुम भूल कर रहे हो तुम्हारे विचारानुसार तो पचिलीज़ के पुत्र थेटिस ने जो बुराई के सामने मृत्यु को स्वीकार किया था यह उचित नहीं था क्यों कि जब उसकी मातादेवी ने उसे समझाया था कि अपने मित्र की मृत्यु का बदला लेने के हेतु तू हेकृर का प्राण घातक मत होवे क्योंकि ऐसा करने से तू मारा जायगा तो उसने माता के वचन सुनतो लिये परन्तु डरपोक बनकर जीवित रहना स्वीकार नहीं किया किन्तु स्पष्टतया कहा मैं तो पापी के शीघ्र ही प्राण लूंगा क्योंकि मैं संसार में लोगों के बीच हंसी कराकर और मित्र का बदला न लेकर जीवित रहना अच्छा नहीं समझता, तो क्या तुम सोच सकते हो कि उसने मृत्यु वा भय की कुछ भी चिन्ता की थी? जहां कहीं पर भी मनुष्य को नियत किया जावे तो बिना मृत्यु व भय की चिन्ता किये उसे वहीं डटा रहना सराहनीय है।

एथेन्स निवासियो! एम्फीपोलीज़ व डेलियन की लड़ाइयों में जहां कहीं पर भी मेरे सेनाधिकारियों ने मुझे नियत

किया था मैं मृत्यु की कुछ भी चिन्ता न करके मनुष्यों की तरह वहीं अड़ा रहा, और यदि मैं मृत्यु या अन्य भय के कारण अपना स्थान छोड़ देता तो मेरे लिये लज्जा की बात होती क्योंकि ईश्वर ने मुझे आज्ञा दी है कि मैं अपना जीवन ज्ञान प्राप्ति व आत्मपरीक्षा में व्यतीत करूं। यदि उस समय मैं अपना स्थान छोड़ देता तो अवश्य ही मेरे ऊपर अभियोग चलाया जा सकता था कि मैंने ईश्वर की आज्ञा का पालन नहीं किया अतः नास्तिकता प्रगट की। यदि मैं मृत्यु से डर जाता तो देवोत्तर का पालन न करता क्योंकि मृत्यु से डर जाना अपने को बुद्धिमान समझना है क्योंकि इससे सिद्ध होता है कि हम मृत्यु की प्रकृति जानते हुए अपने को प्रगट कर रहे हैं जब कि वास्तव में हमें यह ज्ञान नहीं है कि मृत्यु क्या है? सम्भव है कि मृत्यु ही मनुष्य के लिये सर्वश्रेष्ठ वस्तु होवे परन्तु मनुष्य मृत्यु से इस प्रकार डरते हैं जैसे कि वह कोई अत्यन्त बुरी वस्तु है। और यह क्या बात है? केवल जिस बात का हमें कुछ भी ज्ञान नहीं उसमें अपने को पूर्ण ज्ञानी समझना है।

मित्रो! इस विषय में भी मैं सर्वसाधारण से भिन्न हूं और यदि मैं लोगों से अधिक बुद्धिमान होने की डींग भरता हूं तो वह इसी कारण कि मैं यह कहकर कि मुझे दूसरी दुनियाँ का ज्ञान है, अपने को झूठा ज्ञानी नहीं बनाता। परन्तु मैं बड़ों की आज्ञा का पालन न करना, चाहे वह मनुष्य हों वा देवता, बहुत बुरा समझता हूं। मैं कभी किसी बुरे कार्य्य को करने के लिये उद्यत नहीं हूं और न किसी ऐसे काम के करने से जिसका भला होना सम्भव दिखाई देता है हिच किचाता

हैं। अनायटस कहता है कि यदि अब सुकरात को मुक्त करदिया गया तो यह नवयुवकों को बिगाड़ना आरम्भ कर देगा। यदि आप उसकी इस बात ध्यान न देकर मुझ से कहें कि 'सुकरात। इस समय तो हम तुमको इस शर्त पर छोड़े देते हैं कि तुम अभी से अपने मतों को तिलाञ्जलि देदो और यदि तुम फिर भी ऐसा करते हुए पाये जाओगे तो हम तुम्हें प्राण दण्ड देंगे'। यदि आप इस शर्त पर मुझे मुक्त करदें तो मैं यही कहूंगा कि 'श्रीमानों की आज्ञा शिरोधार्य है परन्तु मैं आपकी आज्ञा को इतना आवश्यक नहीं समझता जितना कि ईश्वरीय आज्ञा का पालन, और जब तक मेरे शरीर में सामर्थ्य और श्वास है तब तक मैं आपलोगों को शिक्षा देने से कदापि मुँह न मोडूंगा। और जिस किसी से मिलूंगा उसी को सत्य प्रगट करूंगा और कहूंगा कि माननीय महाशय ! आप एथेन्स के रहनेवाले हैं जो कि ज्ञान में बड़ा विख्यात और प्रशंसित नगर है, क्या आपको लाज भी नहीं आती कि आप ज्ञान व बुद्धि के सामने प्रशंसा, धन और नाम की अधिक चिन्ता करते हैं ? क्या आप आत्म शिक्षा की ओर ध्यान न देंगे ! यदि वह उत्तर देगा कि 'मैं ध्यान देता हूं' तो मैं उसे सहज मुक्त कर छोड़ न दूंगा किन्तु उसकी परीक्षा करूंगा और उसे भला बुरा कहकर ऊंची नीची सुनाऊंगा कि तुम बहुमूल्य वस्तुओं का कुछ भी ध्यान न रखकर निरर्थक बातों की चिन्ता किया करते हो। जो कोई भी मुझे मिलेगा, वृद्ध हो अथवा बालक, सभी के साथ मैं ऐसा व्यवहार करूंगा परन्तु अधिकतर अपने साथियों के साथ क्योंकि उनसे मेरा घनिष्ट ईश्वर ने ऐसा करने की मुझे आज्ञा दी है।

सियो! ईश्वर की ओर से मेरी सेवा से बढ़कर तुम्हें इस नगर में अधिक मूल्यवान कोई वस्तु नहीं प्राप्त है क्योंकि मैं अपना सारा जीवन इधर उधर जाने में व्यतीत करता हूं और लोगों से कहता फिरता हूं कि तुम सब से पहिले आत्मिक शिक्षा की चिन्ता करो तत्पश्चात् धन, दौलत और अन्य सांसारिक वस्तुओं की, क्योंकि धन दौलत से नेकी नहीं प्राप्त होती परन्तु नेकी से धन, दौलत और प्रायः सब ही मूल्यवान वस्तुएं जो मनुष्य को प्राप्त हैं, मिल सकती हैं। यदि मैं इसी प्रकार की शिक्षा से युवकों को बिगाड़ता हूं तब तो तुम्हारी बड़ी भूल है और यदि कोई व्यक्ति कुछ और ही बतलाता है। तो निश्चय जानो कि वह असत्य भाषण करता है अतएव एथेन्स निवासियो! अनायतस की बात सुनो अथवा न सुनो मुझे मुक्त करो अथवा न करो किन्तु विश्वास रक्खो कि मैं अपने जीवन का उद्देश नहीं पलटूंगा उसके लिये मुझे एकबार नहीं भले ही सैकड़ों बार सूली पर चढ़ना पड़े !!!

एथेन्स निवासियो! मेरी पूर्व प्रार्थना का विचार करके बीच में टोक टाक मत करो क्योंकि आपको मेरी बातें सुनने से लाभ होगा। मैं आप से एक और बात कहता हूं जिसे सुनकर स्यात् आप हल्ला मचावेंगे किन्तु ऐसा न करना विश्वास रक्खो कि यदि तुम मुझ जैसे को प्राण दण्ड दोगे तो अपने लिये कण्टक बोओगे। मैलीतस व अनायतस मुझे कोई हानि नहीं पहुंचा सकते क्योंकि ईश्वर की ओर से मुझे आशा है कि भले मनुष्य को कोई पापी हानि नहीं पहुंचा सकता अब मेरी मृत्यु हो वा देश निकाला अथवा मेरे अधिकार छिन जावें इन बातो को मैलीतस भारी सम

भला होगा परन्तु मैं ऐसा नहीं समझता किन्तु याद रक्खो कि वह एक निरपराधी की जान लेकर पाप कर रहे हैं। एथेन्स निवासियों अब मैं अपनी निरपराधता सिद्ध करने के लिये एक भी शब्द नहीं कह रहा हूँ मैं तो केवल आप से प्रार्थना कर रहा हूँ कि ईश्वर के दिये हुये पुरस्कार को पृथक करके परम पिता के प्रति पाप मत करो। यदि तुम मुझे मृत्यु दण्ड दे दोगे तो स्मरण रक्खो कि मेरा स्थान भरने के लिये तुम्हें कोई दूसरा योग्य पुरुष नहीं मिलेगा ईश्वर ने मुझे इस नगर पर आक्रमण करने के लिये भेजा है, जैसे डुरकी मक्खी सुस्त घोड़े की नासिका में घुसकर डंक मारती है जिससे घोड़ा निद्रा त्यागकर भागने लगता है उसी प्रकार मैं भी आप सोते हुओं के बीच तर्क रूपी डंक मारता हूँ जिससे आप लोग चैतन्य हो जाते हैं। मैं सदा आपसे प्रार्थना करता रहता हूँ। व समयानुसार भला बुरा भी कहता हूं। आपको मेरा स्थान भरने के लिये कोई योग्य पुरुष न मिलेगा और यदि आप मेरी शिक्षा मान लेंगे तो मेरा जीवन बच जायेगा। यदि आप अनायतस की बात स्वीकृत कर लेंगे तो मेरा एक ही हाथ में काम तमाम कर देंगे और फिर बहुत समय तक बिना जगाये पड़े रहेंगे जब तक कि आपके जगाने के लिये परमात्मा पुनः कृपा करके कोई दूसरा योग्य पुरुष न भेजेंगे। इस बातको आप सुगमता से समझ सकते हैं कि ईश्वर ने ही मुझे इस नगर में भेजा है क्योंकि सोचिये तो सही मैं कभी भी किसी मनुष्य के आदेश से अपना लाभ त्याग कर मारा२ लोगों के पास यह कहता हुआ न फिरता कि आप धन दौलत के सामने भलाई को अधिक प्रतिष्ठा करें जिस प्रकार कि

पिता वा बड़ा भाई शिक्षा देता है। इन कामों के करने से न तो मुझे कोई निजी लाभ होता है और न धन की प्राप्ति ही होती है क्योंकि आप स्वयं देखते हैं कि मेरे विरोधियों ने और तो बहुत दोषारोपण किये हैं किन्तु उन्होंने मेरे ऊपर धन लेने का दोष नहीं लगाया है क्योंकि इसके लिये वे कोई साक्षी नहीं ला सकते थे मेरी निर्धनता भी मेरी ही बात की पुष्टि कर रही है।

स्यात् आपको यह बात आश्चर्य जनक मालूम होगी कि मैं निजी तौर पर तो लोगों को शिक्षा देता हूं परन्तु यहां महा सभा में आकर भाग नहीं लेता जहां पर मैं अपने भाव सहस्रों मनुष्यों पर प्रकट कर सकता हूं इसका कारण कहते हुये आपने मुझे सुनाही होगा वह ईश्वर का दिया हुआ एक दैवी भाव है जिसका वर्णन मैलीतस ने भी अपने अभियोग में किया है। यह मेरे साथ बाल्यावस्था से ही है यह मुझे बुरा कार्य करने से तो रोक देता है परंतु किसी कार्य करने में सहायक नहीं होता है यही भाव मुझे सार्वजनिक सभाओं में भाग लेने से रोकता है क्योंकि एथेन्स निवासियो! यह स्पष्ट है कि यदि मैंने राजनीति में भाग लेने की चेष्टा की होती अवश्य ही मैं अपने प्राण कभी का खो बैठता। मैं सत्य क रहा हूं अतएव मेरे ऊपर क्रोधित न हूजिये। एथेन्स नि किसी भी स्थान में ऐसा कोई मनुष्य नहीं है जो सब व राजनीति का विरोध करता हुआ अधिक समय तक प्राण बचा सके। इसलिये जो कोई भी न्याय के लिये चाहे तो उसे यह कार्य निजी तौर पर करना उचित है य संसार में एक पल के लिये भी बेखटके जीने को

मैं इस बातको शब्दों द्वारा नहीं किन्तु कार्यों से सिद्ध कर सकता हूं। अब सुनिये कि कोई भी मनुष्य मुझे मृत्यु या अन्य भय को मनको देकर किसी भी बुरे काम करने के लिये बाधित नहीं कर सकता चाहे वह कैसा ही उद्योग क्यों न करे! मेरी यह बात न्यायालय में कोरी भूठी कहावत सी ही न समझी जावे किन्तु यह अक्षरशः सत्य है। मैंने यदि कभी महासभा में कोई पद प्राप्त किया था तो यह उस समय सरपंच का था जब आप लोगों ने अर्गीनूसी की लड़ाईवाले आठों सेनापतियों के प्रति एक ही साथ दण्ड आज्ञा देने की इच्छा थी उस समय मैं ही मुखिया था उस समय प्रधानों में से मैं ही अकेला था जिसने आपकी सम्मति के विरुद्ध न्याय पूर्ण तथा नियमानुकूल सम्मिति प्रगट की थी। वक्तागण तथा श्रोतागण मेरे मृत्यु देने व देश निकाले की धमकी देकर चिल्लाने लगे थे परन्तु मैंने यही उचित समझा था कि कारागार व मृत्यु की चिन्ता न करके मुझे तो न्यायानुसार सम्मति देना चाहिये। यह तो प्रजा तंत्र राज्य के समय की बात रही अब धन पतिओं के राज्य की भी सुनिये। जब उनका आधिपत्य आया तो तीस प्रधानों ने मुझे व चार अन्य पुरुषों को सभा में बुलाया और सेलेमिस स्थान से लीयन नामी पुरुष को पकड़ लाने की आज्ञा दी जिसका पालन न करने पर मृत्यु दण्ड नियत किया गया था। यह लोग इस प्रकार की कठिन आज्ञाएं अपने पापों में अधिक मनुष्यों को सम्मिलित करने की इच्छा से देते थे। परन्तु उस समय भी मैंने शब्दों से नहीं कार्यों से दिखला दिया कि मृत्यु को मैं तिनके के समान भी नहीं ... भता और ईश्वरीय नियम मुझको सदा ...

यह राज सभा मुझे भय भीत कर बुराई कराने में सफल न हो सकी शीघ्र ही वह राज्य नष्ट होगया यदि वह कुछ दिवस और भी स्थिर रहता तो मैं अवश्य ही कालका कवर बनता इस वात के तो आप सब लोग ही साक्षी हैं।

क्या आप अब भी मानते हैं कि यदि मैंने सार्वजनिक सभाओं में भाग लिया होता तो अब तक जीवित रह सकता था ? मैं ही क्या कोई भी ऐसा पुरुष जीवित नहीं रह सकता था। आप स्वयं मेरे सार्वजनिक व निजी जीवन पर दृष्टि डालकर देख सकते हैं कि मैंने कभी किसी मनुष्य के लिये यहां तक कि अपने शिष्यों के लिये भी न्याय त्याग कर सम्मति नहीं दी मैंने कभी किसी भी वृद्ध वा वालक से वातचीत करने के लिये निषेध नहीं किया और न किसी से द्रव्य ही स्वीकार किया चाहे कोई मनुष्य धनवान हो वा निर्धन यदि उसकी इच्छा हो तो चाहे जितने समय तक वातचीत कर सकता है। न्यायानुसार मेरे ऊपर किसी भी मनुष्य के विगाड़ने वा सुधारने का दोषारोपण नहीं किया जा सकता क्योंकि न तो मैंने कभी किसी को विद्या पढ़ाई और न पढ़ाने की चेष्टा की ! यदि कोई मनुष्य कहे कि उसने मुझसे विद्या पढ़ी है तो समझलो कि वह झूठ वोलता है, अब प्रश्न यह है कि लोग मेरी संगति को क्यों चाहते हैं ? क्या आपने कभी इसका कारण सुना है ? मैंने आपसे सत्य वात जो थी वह कहदी कि उन्हें मेरी तर्क सहित वोल चाल अच्छी मालूम होती है। सचमुच उसे सुनना वड़ा चित्ताकर्षक मालूम पड़ता है। मेरा विश्वास है कि ईश्वर ने मुझे स्वप्न, वोलचाल, देवोत्तर प्रायः सभी वातों में लोगों की परीक्षा करने की आज्ञा दी है। यह वात

सत्य है, यदि सत्य न होती और मैंने युवकों को विगाड़ा होता तो आज वही लोग बड़े होने पर मेरे प्रति अभियोग चलाते अथवा बदला लेने का उद्योग करते। और यदि वे लोग ऐसा करने से हिचकते तो उनके माता पिता व सम्बन्धी मेरी की हुई बुराई को याद करके बदला अवश्य ही लेते। उनमें से यहां बहुत से उपस्थित हैं, मेरे प्रान्त का किराती, किराती बुलस, लिसीनियास इत्यादि बहुत से हैं जिन के मैं नाम गिना सकता हूं, मेलीतस उनको साक्षी भी बना सकता था यदि मैं वास्तव में ही दोषी होता। यदि वह ऐसा करना भूल भी गया था तो मैं एक ओर खड़ा हुआजाता हूं और वह चाहे जिसको यहां उपस्थित करे यदि उसे कोई मिल सकेतो। परन्तु बात तो कुछ और ही है, मैलीतस व अनायतस तो मुझे नवयुवकों का बिगाड़नेवाला कह रहे हैं किन्तु युवक लोग उलटे मेरी सहायता करने को उद्यत हैं। यदि शीघ्र बिगड़े हुओं को मेरे सहायक होना मान भी लिया जावे तो उनके सम्बन्धी मेरे ऊपर दोष लगा सकते हैं। कारण तो यह है कि मैं समूल निरपराधी हूं।

जो कुछ मैंने अपने पक्ष में कहा वह बहुत कुछ है। स्यात् आप में से कोई सोच रहा होगा कि यदि उसके ऊपर इससे भी कम दोष लगाया गया होता तो उसने अपने बाल बच्चे न्यायालय में लाकर रोना पीटना आरम्भ करके मृत्यु दण्ड के हटाने की आप से प्रार्थना की होती। अगर कोई ऐसा सोच रहा है तो स्यात् वह मुझे कठोर हृदय समझकर क्रोध में आकर अपनी सम्मति मेरे प्रतिकूल दे। यदि कोई ऐसा विचार कर रहा है तो मैं धीरता से यही उत्तर [illegible] हूं।

मेरी स्त्री है, और तीन पुत्र हैं जिन में एक तो अभी अजान ही है' तब भी मैं उन्हें यहां लाकर न्यायाधीशों से कृपा कराने की प्रार्थना न करूंगा। भूल से अथवा जान बूझकर लोग मुझे सर्व साधारण के प्रतिकूल समझ रहे हैं, उन लोगों के लिये जो वीरता और बुद्धिमानी में विख्यात हैं यह विचार करना बड़ी लज्जादायक बात होगी। मैंने बहुत से प्रशंसित पुरुषों को देखा है कि वे अपने मृत्यु दण्ड दिये जाने के समय, मृत्यु से भय खाते हैं और अपने को अमर समझते हैं यह एक आश्चर्य की बात है। मेरी समझ में ऐसे लोग नगर के ऊ पर कलंक लगाते हैं क्योंकि यदि कोई विदेशी आवे तो यही विचार करेगा कि यहां के कर्मचारी जो सर्व-साधारण में से चुने जाते हैं स्त्रियों से किसी प्रकार उच्च नहीं हैं! एथेन्स निवासियो! न तो तुम में से यह काम किसी को स्वयं करना चाहिये और न दूसरे को करने देना चाहिये तुमको घोषणा करा देनी चाहिये कि जो लोग ऐसा करके नगर की हंसी कराते हैं वह दण्डनीय हैं और किसी प्रकार कृपा पात्र नहीं हैं।

प्रतिष्ठा के प्रश्न को छोड़कर भी मित्रो! मैं रो पीटकर न्यायाधीशों से मुक्त होने की प्रार्थना करना उचित नहीं समझता, मेरा तो कर्त्तव्य यह है कि तर्क द्वारा उसको निरपराधता सिद्ध करूं क्योंकि न्यायाधीश तो न्याय करने के लिये हैं न कि अपने मित्रों पर कृपा करने के लिये, उसने इस बात की शपथ भी देदी है कि वह कभी अनुचित कृपा न दिखाकर सदा न्यायानुसार कार्य सञ्चालन करेगा। इसलिये न तो हमें आप लोगों को अपनी शपथ तोड़ने के लिये आग्रह करना

चाहिये और न आप लोगों को हमें ऐसा करने देना चाहिये क्योंकि इनमें से कोई भी बात उचित नहीं है। अतएव आप लोग मुझको ऐसा कार्य करने के लिये न कहें क्योंकि मैं इन बातों को अपवित्र समझता हूं, विशेष कर आज तो आप किसी प्रकार न कहें क्योंकि मैलीतस तो मुझे अपवित्रता करने ही के कारण दोषी ठहरा रहा है। यदि मैं ऐसा करने पर आप का कृपापात्र बन भी गया तो भी देवताओं का तिरस्कार करूंगा क्योंकि आपने देवताओं के सम्मुख जो शपथ दी है उसी को तोड़ने के लिये मैं आपको बाधित कर रहा हूं। इससे तो यह सिद्ध होजा- यगा कि मैं देवों की उपासना नहीं करता और मैलीतस ने यही दोष मेरे ऊपर लगाया है। परन्तु मैं तो देवों में विश्वास रखता और उनकी उपासना करता हूं, और मेरे विरोधी उनमें श्रद्धा नहीं रखते। अतएव मैं ईश्वर के नाम पर न्याय को आपके ऊपर छोड़ता हूं जिससे आपका भी और मेरा भी कल्याण हो।

(इतने पर सभासदों की सम्मति ली गई और सुकरात २२० के विपरीत २८१ सम्मतियों से दोषी ठहराया गया)

सुकरात—एथेन्स निवासियो! आपने जो आज्ञा दी है मैं उससे कई कारणों से दुखित नहीं हुआ हूं। यह तो मुझे पहिले ही से आशा थी कि मैं दोषी ठहराया जाऊंगा किन्तु सम्मतियों की संख्या देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ है। मैं यह नहीं समझता था कि मेरे विपरीत इतनी थोड़ी सम्मतियां होंगी किन्तु अब मैं देखता हूं कि यदि केवल तीस ही मनुष्यों ने मेरे पक्ष में अधिक सम्मति दी होती तो

में मुक्त होजाता। अब मुझे यह प्रतीत होता है कि मैंने मैली-तस को बचा दिया क्योंकि यदि अनायतस और लायकन दोष लगाने के लिये आगे न बढ़ते तो मैलीतस सम्मतियों का पञ्च भाग अपने पक्ष में न कर पाता अतएव देश के नियमा-नुसार उसे एक सहस्र ड्रेक्मा (एक सिक्का) दण्ड के देने होते और उसके अधिकार व सम्पत्ति छिन जाती।

तो अब वह मेरे लिये मृत्यु दण्ड तजवीज़ कर रहा है, करने दो। अब मैं नियमानुसार कौन सा दण्ड अपनी ओर तजवीज़ करूं? मैं लोगों के हितार्थ अपना जीवन व्यतीत करने के बदले किस बात का भागी हूं? मैंने अपने जीवन में सारे सांसारिक सुख, धन दौलत, सार्वजनिक सभाएं, वक्तृताएं और अधिकार छोड़ दिये थे क्योंकि मैं जानता था कि इनमें भाग लेने से मेरे प्राण हते जावेंगे। इस कारण मैं उन स्थानों पर नहीं गया जहां कि मैं किसी के भी साथ भलाई नहीं कर सकता था। इसके विपरीत मैं आप लोगों में यह कहते घूमा कि 'आप पहिले अपनी आत्मा को पहिचानें और सुधारें तत्प-श्चात् सांसारिक बातों की ओर ध्यान दें। तो ऐसा जीवन व्यतीत करने के बदले मैं किस बात के योग्य हूं? एथेन्स निवासियो! यदि न्यायानुसार कहा जावे तो मैं किसी अच्छी बात के योग्य हूं। सर्व साधारण का हित चिन्तक जो सदैव भलाई करने में समय व्यतीय करता है, किस बात के योग्य है? उसके लिये सर्वसाधारण के सार्वजनिक भवन *

* एथेन्स में यह एक भवन था जहां पर वे लोग जो कि अपना जीवन देशहित में व्यतीत करते थे, सर्वसाधारण के व्यय पर बुढ़ौती में सुख भोगने के लिये रक्खे जातेथे। वास्तविक चरितनायक के लिये यही स्थानयोग्य था।

(Public maintenance in the Prytaneum) में रखने के अतिरिक्त कौनसा अच्छा पुरस्कार हो सकता है? यह पुरस्कार किसी अन्य प्रतिष्ठा प्राप्त वीर पुरुष के लिये अधिक योग्य है क्योंकि अन्य लोग तो आपको बाह्य प्रसन्नता पहुंचाने का उद्योग करते हैं। परन्तु मैं आपको सच्ची आन्तरिक प्रसन्नता पहुंचाने का उद्योग करता था। अतः मैं अपनी ओर से अपने लिये यही बात तजवीज़ करता हूं।

रोने पीटने और प्रार्थनायें करने के विषय में जो मैंने अपने विचार प्रगट किये हैं, स्यात् आप उनको सुनकर मुझे हठी या घमण्डी समझते हों। किन्तु इसका कारण यही है कि मैंने कभी किसी के साथ बुराई नहीं की है, यद्यपि मैं केवल थोड़ा ही समय मिलने के कारण आपको यह बात सिद्ध नहीं कर सका हूं। यदि और स्थानों की तरह एथेन्स में भी यही नियम होता कि मृत्यु जीवन का प्रश्न एक दिन में तय न किया जावे तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि मैं आपको अपनी बात का विश्वास दिला देता, परन्तु इस थोड़े से समय में शत्रुओं के झूठे अभियोगों के प्रति निरपराधी सिद्ध करना कठिन है। जब मुझे अपनी पवित्रता का पूर्ण विश्वास है तो मुझे अपने लिये बुरी बात क्यों तजवीज़ करनी चाहिये? इससे तो यही बात अच्छी है कि एक सरासर बुरी वस्तु को त्यागकर मैलीतस की तजवीज़ की हुई वस्तु (मृत्यु) से भेंट करूं क्योंकि उसका तो बुरा होना निश्चय ही नहीं है। क्या मैं इसके बदले में कोई ऐसी बात तजवीज़ करूं जिसे मैं स्वयं ही बुरा समझता हूं? मैं कारागार में अधिकारियों का गुलाम

रहकर जीवन क्यों व्यतीत करूं ? मैं आप से पहिले ही कह चुका हूं कि धनाभाव के कारण मैं द्रव्य दण्ड नहीं दे सकता तो क्या मैं देश निकाला तजवीज़ करूं ? जब आपही मेरे नगर-वासी होकर मेरा वाद विवाद सहन न कर उससे छुटकारा पाने का उद्योग कर कर रहे हैं तो मुझे कब आशा होसकती है कि अन्य देश के लोग जहां जाने की आप मुझे आज्ञा दें, सहर्ष सहन करेंगे। क्या मैं इस वृद्धावस्था में एथेन्स को छोड़कर मारा २ इधर उधर फिरूं क्योंकि जहां कहीं मैं जाऊंगा युवक अवश्यही मेरी बातें सुनने की इच्छा प्रगट करेंगे, यदि मैं उनसे नाहीं करूंगा तो वे अपने वृद्धों से कहकर मुझे वहां से भी निकलवा देंगे, और यदि मैं सुना-ऊंगा तो उनके माता, पिता तथा सम्बन्धी यहां वालों की तरह मुझे निकाल देंगे।

स्यात् कोई कहेंगे 'सुकरात तुम एथेन्स से निकल कर मौन क्यों नहीं साधलेते'। यह मैं नहीं कर सकता क्योंकि ऐसा करने से ईश्वर की आज्ञा का उल्लंघन होगा स्यात् आप इस बात में विश्वास न करेंगे। यदि मैं कहूं कि भलाई के विषय में दिन रात बातें करने के अतिरिक्त कोई ऐसी अच्छी वस्तु नही है जिसे मनुष्य प्राप्त कर सके और ऐसा न करने से मनुष्य जीवन, जीवन ही नहीं कहा जासकता, तो आपको किञ्चित मात्र भी विश्वास नहीं होगा। किन्तु मित्रो! सत्य तो यही है और इसके अतिरिक्त मैं दण्डनीय नहीं हूं। यदि मैं धनवान होता तो विना हानि सहे रुपया दे कर मुक्त हो जाता परन्तु यह बात है नहीं क्योंकि मैं निर्धन हूं, आप बहुत अल्प धन मांगें तब काम चले क्योंकि मैं एक ड्रुकमा (जो ६०

रहने के बराबर था) ही दे सकता हूं । एथेन्स निवासियो ! ये लोग और क्रिटो सौम्य कृपया को कह कर रुपये जमानत करते हैं ।

(यह सुनकर न्यायाधीशों ने उसे मृत्यु दण्ड की आज्ञा दी)

सुकरात—एथेन्स निवासियो ! मैं सत्तर वर्ष की आयु वाला हूं इस से कुछ दिन पश्चात् स्वयं ही मर जाता, आपने मृत्यु दण्ड दे कर अधिक समय का लाभ नहीं कर लिया, एक निरपराधी को मृत्यु दण्ड देने के कारण नगर हितचिन्तक तुम्हें बहुत तंग करेंगे । क्योंकि ये लोग आप को गालियां देते समय मुझको अवश्य ही बुद्धिमान कहेंगे चाहे मैं ऐसा होऊं या नहीं । मित्रो ! आप विचार करते होंगे कि मैंने संतोषजनक वाद विवाद नहीं किया जिससे मैं अपनी पवित्रता सिद्ध कर के बच जाता । परन्तु यह बात नहीं है मैंने निर्लज्जता और ढीठता में न्यूनता दिखाई थी इसी कारण दण्डनीय ठहराया गया क्योंकि यदि मैं आपके सम्मुख रोता, पीटता और चक्षु-ताधा करता हुआ आता तो मुक्त हो जाता । मैंने अपने वाद विवाद के बीच सोचा कि कोई ऐसा काम न करूं जो मानव जाति को लज्जा लानेवाला है । रोने पीटने से मुक्त होने के सामने मैं मृत्यु को अच्छा समझता हूं । नियमानुसार मुकदमे में और युद्ध में कुछ ऐसी बातें हैं जिन्हें मनुष्य मृत्यु से बचने की इच्छा से नहीं कर सकता । लड़ाई में ऐसे समय प्राप्त होते हैं जब एक योद्धा अपने शस्त्र छोड़ घुटनों के बल गिर कर शत्रु से प्राण दान मांगे और प्रायः संकट के सभी समयों में यदि मनुष्य नीच से नीच कार्य करने पर उतारू हो जावे तो अपनी जान बचा सकता है । परन्तु मित्रो ! मेरी समझ

में तो मृत्यु से बचना इतना कठिन नहीं है जितना कि दुष्टता से क्योंकि यह मनुष्य को अधिक शीघ्रता से पकड़ती है। अब मैं तो बूढ़ा हो गया सो मृत्यु के चक्कर में हूं किन्तु विरोधी वायुगति से दौड़नेवाली दुष्टता के आधीन हैं। अब मैं तो आप से दण्ड पाकर मृत्यु पानेके लिये जाऊंगा किन्तु यह लोग अपनी दुष्टता और बुराई के बदले ईश्वरीय दण्ड पाने के लिये जावेंगे मैं भी अपने दण्ड को भोगूंगा और यह लोग भी। ईश्वर को ऐसा ही करना था परन्तु मेरी समझ में तो न्यायाधीशों ने अन्याय किया है।

जिन लोगों ने मुझे दण्ड दिया है उनको मैं भविष्यतवाणी कहूंगा क्योंकि मैं मरने के लिये जा रहा हूं और यह ऐसा समय है कि जब बहुधा लोगों में भविष्यतवाणी करने की शक्ति आ जाती है। अब मैं अपने दण्ड देनेवालों को भविष्यतवाणी कहता हूं कि आप लोगों ने जो मुझे दण्ड दिया है उससे भी कठिन आपत्ति आप लोगों को मेरी मृत्यु के पश्चात् घेरेगी। आपने यह काम इस बात को सोचकर किया है कि मेरे मरजाने पर आप लोग अपने जीवन का हिसाब देने से मुक्त होंगे किन्तु परिणाम विपरीत ही होगा मुझसे शिक्षा प्राप्त बहुत से लोग उठ खड़े होंगे जो आप लोगों से जीवन सम्बन्धी वाद विवाद करेंगे। वे नवयुवक हैं सो आप उन पर अधिक क्रुद्ध होंगे इस कारण वे आप लोगों के ऊपर बहुत ढीठता दिखावेंगे। यदि आप यह सोचते हैं कि लोगों को मृत्यु दण्ड देकर आप बुरा भला सुनने से बच जावेंगे तो आप बड़ी भूल कर रहे हैं बचने का यह मार्ग असम्भव है और निन्दनीय है। इस बुरे भले कहने को धमकियों से

बन्द कर देना ठीक नहीं किन्तु आत्मसुधार करना ही उचित है। मेरे विरोधियों व दण्डदेनेवालों के प्रति यही मेरी भविष्यवाणी है।

मृत्यु स्थान को जाने के पूर्व में अपने पक्षपातियों से, जब तक राजकर्मचारी अपने कार्य में निमग्न हैं, मृत्यु के विषय में बात चीत करूंगा। मुझे कोई कारण नहीं दिखाई देता जो हमें बात चीत करने से रोके। अतः यहां से जाने के समय तक हम आपस में बात चीत करलें। अब मैं आपको यह समझा देना चाहता हूं कि मेरे ऊपर क्या आया है। मैं आपको सच्चे न्यायकारी कह कर पुकारूं तो अनुचित न होगा अब सुनिये कि मेरे ऊपर क्या आया है! मेरे साथ एक ईश्वरीय भाव रहता है जो सदा बुरे काम करने में मुझे टोक देता है। आज जब से मैं घर से चलाहूं तब से न तो मार्ग में, न न्यायालय में और न अब उस भाव ने मुझे किसी कार्य के करने या किसी बात के कहने से रोका है, इस कारण मैं कहता हूं कि जो वस्तु मुझको होने वाली है वह भली ही है, जो लोग उसे बुरा कहते हैं वह बड़ी भारी भूल करते हैं क्योंकि यदि वह बुरी होनी तो उस ईश्वरीय भाव ने मुझे रोक दिया होता

यदि हम एक दूसरी तरह से देखें तब भी जान सकते हैं कि मृत्यु एक अच्छी वस्तु है क्योंकि मृत्यु दो बातों में से एक हो सकती है (१) या तो मृत्यु प्राप्त मनुष्य सुषुप्ति की दशा में हो कर जन्म लेने से बरी हो जाता है या (२) सार्वजनिक विचार के अनुसार जीव दूसरे स्थान में जाकर नूतन शरीर धारण कर लेता है। यदि मृत्यु सुषुप्ति की दशा है जिसमें मनुष्य बिना स्वप्न देखे गहरी नींद सोता है तब तो

रना चाहिये। केवल भले मनुष्य के गुणों को भूल नहीं सके, मेरे ऊपर जो विपत्ति आज आकर पड़ी है यह कोई अकस्मात् बात नहीं है। दैवी भाव ने मुझे नहीं रोका इससे मैंने परिणाम निकाला कि मेरा मर जाना ही भला है। अतः मैं अपने विरोधियों अथवा विपक्षियों से किञ्चित भी अप्रसन्न नहीं हूं परन्तु उन्होंने तो मुझे हानि पहुंचाने के लिये ऐसा किया था, इसने के लिये मैं उन्हें दोषी ठहराता हूं।

परन्तु उनसे मेरी एक प्रार्थना है कि जब मेरे पुत्र बड़े होवें और आत्मिक सुधार के सामने धन दौलत पर अधिक ध्यान दें तो आप लोग उनके साथ ऐसाही बर्ताव करें जैसा कि मैं आपके साथ करता था और यदि अज्ञानी होकर भी अपने को ज्ञानी कहें तो उन्हें भला बुरा कहना। यदि आपने ऐसा किया तो आपकी मेरे और मेरेपुत्रों के ऊपर अतीव कृपा होगी।

समय आवेगा कि मैं मरने के लिये जाऊं और आप संसार में रहने के लिये। मृत्यु अच्छी है या जीवन यह बात तो केवल परमात्मा ही पर विदित है।

[१२]

कारागार में किरातो का सम्भाषण

न्यायालय से लाकर सुकरात एक मास तक कारागार में बन्द रक्खा गया था। क्योंकि उस समय एथेन्स का पुजारी डेलस द्वीपको गया हुआ था और उसके किसी को मृत्यु दण्ड नहीं दिया जा सकता था।

सत्ताईसवें दिन किराते प्रातः ही जब कि चारों ओर अंधेरा छा रहा था, कारागार में सुकरात के पास गया। उस समय सुकरात सोरहा था। इस कारण किराते चुपचाप बैठा रहा। जब थोड़ी देर के पीछे सुकरात जगा तो निम्न लिखित सम्भाषण आरम्भ हुआ।

सुकरात—आज इतने सवेरे क्यों आये हो? अभी अंधेरा है।

किराते—जी हां आज जल्दी आया हूं। अभी सूर्य उदय होने को है।

सुक०—मुझे आश्चर्य होता है कि कारागार रक्षक ने तुमको यहां आने की किस प्रकार आज्ञा देदी?

किराते—सुकरात! वह मुझको जानता है क्योंकि मैं यहां पर प्रायः आया जाया करता हूं इसके अतिरिक्त मैंने उसकी मुट्ठी भी गरम करदी है।

सु०—तुम इतने समय से आकर चुप क्यों बैठे रहे? तुमने मुझे क्यों नहीं जगाया?

कि०—वास्तविक में यही चाहता था। कि मुझे इतना शोक और इतनी बेचैनी न होती किन्तु तुम्हें गहरी नींद सोते हुए देखकर मुझे आश्चर्य होता है। मैं तुम्हारे आराम में गड़बड़ी डालना नहीं चाहता था इसी कारण मैंने तुम्हें नहीं जगाया था। और इस समय भी वैसे ही प्रसन्नता प्रगट कर रहे हैं जैसी कि सदा से अपने जीवन में करते आये हैं आप तो इस विपत्ति को बड़े धैर्य के साथ सहन कर रहे हैं।

सु०—किराते! यदि मैं इस वृद्धावस्था में शोक करता तो मुझे न सोहता।

कि०—और भी तो इतनी आयु के मनुष्य इस विपत्ति में

पड़ते हैं किन्तु उनकी वृद्धावस्था उन्हें शोक करने से नहीं रोकती है।

सु०—यह बात तो सच है परन्तु तुम अपने आने का कारण बताओ।

क्रि०—मैं हृदय विदारक समाचार लाया हूं। चाहे आप ऐसा समझें या नहीं किन्तु मेरे साथियों के लिये और विशेष कर मेरे लिये तो यह अत्यन्त दुःखदायी है।

सु०—तो क्या बात है? क्या डेलस से वह जहाज आगया है जिसके आने पर मैं मारा जाऊंगा?

क्रि०—अभी आया तो नहीं है किन्तु सनियम (Sunium) से आये हुये एक मनुष्य द्वारा विदित हुआ कि वह आज आजायेगा तो फिर कल तुम्हारी जीवनी का नाटक समाप्त होगा।

सु०—जीवन का भले प्रकार अन्त हो जाने दो क्योंकि ईश्वर की यही इच्छा है परन्तु मेरे विचार से तो जहाज आज नहीं आ सकता है।

क्रि०—यह तुमने किस प्रकार जाना?

सु०—मैंने अभी एक स्वप्न देखा था। उसी से मैंने यह परिणाम निकाला है। अच्छा हुआ तुमने मुझे नहीं जगाया अन्यथा स्वप्न में भग पड़ जाता।

क्रि० वह स्वप्न क्या है?

सु०—मुझे ऐसा दिखाई दिया था कि एक सुन्दरी स्त्री धवल वस्त्र (पवित्रता का चिन्ह) धारण किये मेरे पास आकर कह रही है 'The Third day hence thou shalt Fair Pithia reach.'

सत्ताईसवें दिन किराता प्रातः ही जब कि चारों
अंधेरा छा रहा था, कारागार में सुकरात के पास गया। उ
समय सुकरात सोरहा था। इस कारण किराता चुपच
बैठा रहा। जब थोड़ी देर के पीछे सुकरात जगा तो नि
लिखित सम्भाषण आरम्भ हुआ।

सुकरात—आज इतने सवेरे क्यों आये हो? अभी अंधेरा है

किराता—जी हां आज जल्दी आया हूं। अभी सूर्य उद
होने को है।

सुक०—मुझे आश्चर्य होता है कि कारागार रक्षक
तुमको यहां आने की किस प्रकार आज्ञा देदी?

किराता—सुकरात! वह मुझको जानता है क्योंकि मैं य
पर प्रायः आया जाया करता हूं इसके अतिरिक्त मैंने उस
मुट्ठी भी गरम करदी है।

सु०—तुम इतने समय से आकर चुप क्यों बैठे रहे? तुमने
मुझे क्यों नहीं जगाया?

कि०—वास्तविक मैं यही चाहता था। कि मुझे इतन
शोक और इतनी बेचैनी न होती किन्तु तुम्हें गहरी नींद सोते
हुए देखकर मुझे आश्चर्य होता है। मैं तुम्हारे आराम में गड़
बड़ी डालना नहीं चाहता था इसी कारण मैंने तुम्हें नहीं
जगाया था। और इस समय भी वैसे ही प्रसन्नता प्रगट कर
रहे हैं जैसी कि सदा से अपने जीवन में करते आये हैं आप
तो इस विपत्ति को बड़े धैर्य के साथ सहन कर रहे हैं।

सु०—किराता! यदि मैं इस वृद्धावस्था में शोक करता
तो मुझे न सोहता।

कि०—और भी तो इतनी आयु के मनुष्य इस विपत्ति मे

उनकी वृद्धावस्था उन्हें शोक करने से नहीं है।

सु०—यह बात तो सच है परन्तु तुम अपने आने का

क्रि०—मैं हृदय विदारक समाचार लाया हूं। चाहे आप था नहीं किन्तु मेरे साथियों के लिये और विशेष लिये तो यह अत्यन्त दुःखदायी है।

सु०—सो क्या बात है! क्या डेलस से वह जहाज आगया जिसके आने पर मैं मारा जाऊंगा?

क्रि०—अभी आया तो नहीं है किन्तु सनियम (Sunium) से आये हुये एक मनुष्य द्वारा विदित हुआ कि वह आज आजायेगा तो फिर कल तुम्हारी जीवनी का नाटक समाप्त होगा।

सु०—जीवन का भले प्रकार अन्त हो जाने दो क्योंकि ईश्वर की यही इच्छा है परन्तु मेरे विचार से तो जहाज आज नहीं आ सकता है।

क्रि०—यह तुमने किस प्रकार जाना?

सु०—मैंने अभी एक स्वप्न देखा था। उसी से मैंने यह परिणाम निकाला है। अच्छा हुआ तुमने मुझे नहीं जगाया अन्यथा स्वप्न में भंग पड़ जाता।

क्रि० वह स्वप्न क्या है?

सु०—मुझे ऐसा दिखाई दिया था कि एक सुन्दरी स्त्री श्वेत वस्त्र (पवित्रता का चिन्ह) धारण किये मेरे पास आकर कह रही है 'The Third day hence thou shalt Fair Phthia reach.'

न्याय और नियम के पालन करने में वह चट्टान के समान स्थिर रहता था संसार की कोई शक्ति नहीं थी जो उसे कर्तव्य कर्म से डिगा सके। उसने किसी कवि के निम्न लिखित वाक्य को अपने जीवनमें घटाकर दिखा दिया था:—

> निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु
> लक्ष्मी समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टं।
> अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा
> न्यायात् पथः विचलन्ति पदं न धीराः॥

अर्थात् संसार के नीति विशारद चाहे बुराई करें अथवा प्रशंसा करें, चाहे लक्ष्मी स्वयं आवे चाहे रूठ कर सदा के लिये चली जावे चाहे मृत्यु आज ही क्यों न आजावे और चाहे युगान्तर के लिये चली जावे परन्तु धीर पुरुष न्याय से कभी विचलित नहीं होते।

पाठको! आपने देखा सुकरात ने विष का प्याला पीकर अपने प्राण समर्पण कर दिये किन्तु वह अपने कर्तव्य से नहीं हटा हमें लोगोंको भी अपनी जीवनयात्रा में सुकरात के समान सावधान रहना चाहिये।

Printed by Pt Onkar Nath Bajpai at the Onkar Press, Allahabad.

न्याय और नियम के पालन करने में वह चट्टान के समान स्थिर रहता था संसार की कोई शक्ति नहीं थी जो उसे कर्तव्य कर्म से डिगा सके। उसने किसी कवि के निम्न लिखित वाक्य को अपने जीवनमें घटाकर दिखा दिया था:—

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु
लक्ष्मी समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टं।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा
न्यायात् पथः विचलन्ति पदं न धीराः॥

अर्थात् संसार के नीति विशारद चाहे बुराई करें अथवा प्रशंसा करें, चाहे लक्ष्मी स्वयं आवे चाहे रूठ कर सदा के लिये चली जावे चाहे मृत्यु आज ही क्यों न आजावे और चाहे युगान्तर के लिये चली जावे परन्तु धीर पुरुष न्याय से कभी विचलित नहीं होते।

पाठको! आपने देखा सुकरात ने विष का प्याला पीकर अपने प्राण समर्पण कर दिये किन्तु वह अपने कर्तव्य से नहीं हटा हमें लोगोंको भी अपनी जीवनयात्रा में सुकरात के समान सावधान रहना चाहिये।

Printed by Pt. Onkar Nath Bajpai at the Onkar Press, Allahabad.